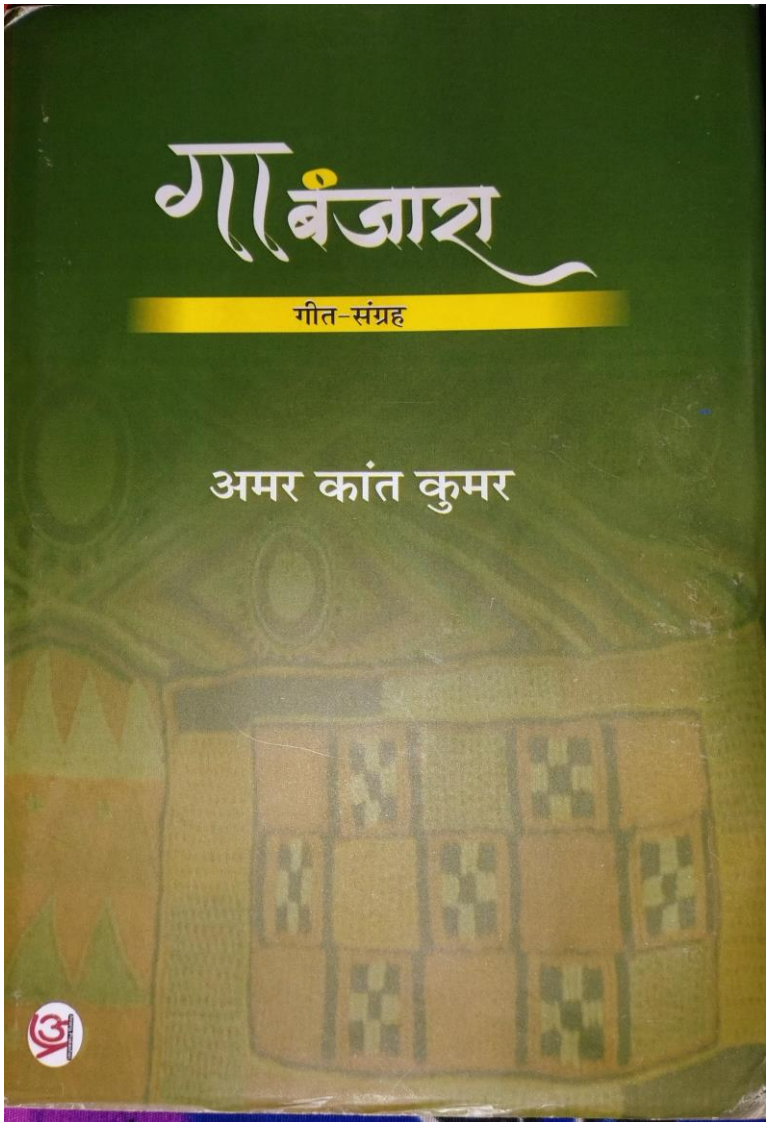
गाबंजारा
गीत-संग्रह
अमर कांत कुमर

सरस्वती-वन्दना

माँ शारदे! वरदान दो

सबको अभय का दान दो ।।

सबको अवगम दो समय का

ज्ञानानुशासन विजय का,

सद्भाव दो, सद्-राग दो

वर पराजित को उदय का।

कण-कण में बिखरे ज्ञान को

सम्प्राप्ति का संज्ञान दो ॥ माँ शारदे ----

यह मनुज संसृति खिल उठे

तो दनुज संसृति हिल उठे,

फिर मनुजता लहरा उठे

फिर ज्ञान- दीपक जल उठे ।

एक निराशा है पल रही

आसों का शत संधान दो । माँ शारदे --

वीणा की नव झंकार से

भागे तिमिर संसार से,

हंसासना, पद्मासना

शोभित ग्रीवा सित-हार से ।

स्रगहस्त! पुस्तक हस्त है

जग को तो निर्मल ज्ञान दो ॥ माँ शारदे ----

मन महकने लगा

मन महकने लगा, तन बहकने लगा

कर दिया कोई जादू तेरे नाम ने,

बन्द-सी आँख मेरी ये कहने लगी

तू ज़रूर आ गई है मेरे सामने।

अब तलक कोई प्राणों में आई न थी

कोई खुश्बू रगों में समायी न थी

मन की वीणा पर उँगली चलायी न थी

प्यार की कोंपलें सुगबुगाई न थीं

तूने पुलका दिया मन के चुप तार को

किस यवनिका से आकर मेरे सामने । मन.....

तेरी पायल की छम-छम बसी प्राण में

गर्म साँसों की सीं-सीं सटी कान में

तेरे अलकों की भीनी महक घ्राण में

जैसे सद्भाव निखरे हों इनसान में

खिल उठा मन-कमल प्राण-सर में विकल

पा तेरी पूर्ण आनन-विभा सामने। मन .....

यों लगा सारा संसार सोने लगा

तेरे पदचाप-तालों में खोने लगा

फूल के गाल पर ओस सोने लगी

चाँद जगको किरण से भिंगोने लगा

यह कोई स्वप्न था याकि तेरा असर

मुझको उलझा दिया इसी अंज़ाम ने। मन .....

कहाँ गई सावन में

साँवली सलोनी तू कहाँ गयी सावन में

द्रिग-द्रिग-धा बूँद थिरके हैं मेरे आँगन में,

बूँदों की डोर पकड़ आ जाओ पार इधर

फिर से ना बीत जाए रीते दिन सावन में।

तड़-तड़-तड़ ताड़ों के पत्ते अब बजते हैं

जुगनुओं के झुण्ड हरे वृक्षों पे सजते हैं,

मेंढकों के टर्-टर् स्वर चहुँओर मचते हैं

टिप्-टिप् ओसारे के नीचे स्वर जगते हैं;

प्यारी तू आओ न! मौसम मन-भावन में। फिर से ना.....

गरज-गरज बादल सोते से जगाता हैं

छिंटका बिजलियों को याद तेरी लाता है,

साँय-साँय झम्प-झपर झंझानिल आता है

कहीं सुप्त कोषों में नाम सुलग जाता है;

सपनीला फूल खिला दो ना मन पावन में। फिर से ना.....

तू हो तो सावन सलोना बन जाता है

तू हो तो दावानल सोना बन जाता है,

तू हो तो दिल का हर कोना सज जाता है

तू हो तो सुरधनु आखों में तन जाता है

अब तो जला दो अगन तरल-सरल साजन में। फिर से ना.....

कमला की बाढ़

घर भर में

विस्तुइया, केंचुआ नाचे

हो राजा,

घर में भूजी भांग

न अबके बाँचे

हो राजा।

कमला मैया

झाड़ू ले

सब खेत

बुहार गई,

फसल-शिशु को

गोंत-गोंत कर -

जल में

मार गई।

बाध-बनों की रानी

रोए साँचे

हो राजा।

काँप रहे थर-थर

धीरज को जाँचे

हो राजा ।।

भुइयाँ बाबा बहुत -

निठुर हैं

खूँटा सुन्न हुआ,

घुसी दरिदरा

खेतों में कि

ना सेर

अन्न हुआ।

तोड़ दिया बच्चा - किसान-

निंद-काँचे

हो राजा ।

अगुताते- पछताते मन

दो-पाँचे

हो राजा ।।

चूल्हे में आ बैठा

गेहुअन

सभी अभावों का,

एक भरोसा

परती-पाँतर में

है नावों का।

कोठी के महुए से

तन को खींचे

हो राजा ।

जीवन-नैया डोले

ऊपर-नीचे

हो राजा ।।

तिस पर फिर

सहना ने

हल्कू को

धमकाया है,

मालिक ने अपनी

कोठी पर

तुरत बुलाया है।

नंगा क्या पहने

और क्या फींचे

हो राजा,

ओढन गगन कि

धरा बिछौना नीचे

हो राजा ।।

नई-सी बयार है

ये कैसी गाँव-शहर नयी-सी बयार है,

हर तरफ़ छलावे का हो रहा क़रार है।

बढ़ते हैं हाथ मित्रता के बसन्त ज्यों

चढ़ते हैं साथ, पूनो को अनन्त ज्यों,

रचते हैं किन्तु घृणा-कालकूट मन में

छलते हैं ऐसे कि 'कालनेमि सन्त' ज्यों;

मत पूछो किसकी ये जीत और हार है। ये कैसी.....

दुधमुहे की बोलत का दूध तो हिरा गया

चान्द लेने नगर-नगर माँ का हियरा गया,

टूटने को विवश सभी ममता के बन्धन

किसके न प्राण, नहीं किसका जियरा गया;

टूटने न दो, स्फीत रेशम का तार है। ये कैसी.....

समय ने उचारे नये सम्बन्ध-मन्त्र-स्वर

बुढ़िया गयी कोयल पुरखों की डाल पर,

कौन सुने चातक की टीस, शोक कोक का

रोटी ने सोख लिये अश्रु के सरोवर ;

आकुल-सा कर्मबिद्ध पंछी का प्यार है। ये कैसी.....

यों न रचो फिर से संशय के रात-दिन

यों ना कसो 'बोनसाई' को पात-गिन,

जीवन के झरने को कल-कल-सा बहने दो

संध्या का मोल कहाँ जीवन के प्रात बिन ;

दुरभिसंधि छोड़, मन की राह बेक़रार है। ये कैसी.....

वंदना के फूल

वंदना के फूल को इतना न मसलो

भावना की महक पीड़ा से कराहे

बन जायेंगे ऋक्छन्द ये तेरी कृपा से

तू शरण दे दे तेरी वाणी सराहे।

दिवा-निशि जलते हुए तेरी लगन के दीप हैं ये

लुटा दे तव चरण में मुक्ता मगन वे शीप हैं ये

निश्छल समर्पण को न इस विधि सताओ, हो छोट चाहे। वन्दना के ---

अर्थ क्या है? ताकते हैं आरती साजे नखत-गण

यों न दुत्कारो कि सारे व्यर्थ हो जाएँ स्वगत क्षण

आस की यह आरती है, व्यर्थ वैभव पर न जा हे । वन्दना के ---

सुप्त वीणा हृदय की झंकार भरने लगी, क्षति क्या ?

रात भर ये आँखें जगने लगीं तो बात अति क्या ?

प्रणय के इस अंकुरन को लजा मत, दे मृदुल बाँहें। वन्दना के ---

स्पर्श यह एक ओस- कण का तृण-शिखा पर स्नेह मिश्रित

सरस अन्तस का निविड़ तम चीर निर्झरिणी विनिस्सृत

वन्दना के फूल अर्पित चरण में तो सुख मना हे । वन्दना के---

ज़मीं पे तारे

ज़मीं पे तारे जो झिलमिलाए

कहो तो कैसी ये बात होगी,

मेरे महल में जो चाँद उतरे

कहो तो कैसी वो रात होगी।

ये मस्त खुश्बू, ये भौंर गुंजन

तनुक-सी फुनगी पे फूल-स्पन्दन,

प्रभात बेला, पुनीत वंदन

तेरे नयन का थिरकता खंजन ;

मेरे हृदय में उतर जो जाए

कहो तो कैसी ये बात होगी। जमीं पे----

स्वच्छन्द वीणा के तार बोले

जो कोई मुक्ति के द्वार खोले ,

मधुर-सा सपना नयन में डोले

कोई जो प्राणों में रस को घोले ;

जो प्रीति-कलिका हृदय खिलाए

कहो तो कैसी ये बात होगी । जमीं पे---

अनंत आकाश का नील रंजन

तेरे प्रणय का ये गाढ़ बंधन ,

थिरक उठे क्यों ना मोर बन मन

न क्यूँ लगे सिकता स्वर्ण का कण ;

जो रस में मेरा हृदय नहाए

कहो तो कैसी ये बात होगी। जमीं पे---

बगुले-सा धवल पंख

बगुले-सा धवल पंख स्वप्न-परी आ गई

आंगन के नीम तले ममता निथरा गई।

माँ का वह गोबर से आँगन को लीपना

आस-भरी आँखों का टुकुर-टुकुर दीपना ,

करुणा असीसों में मुदित-मगन दीखना

माँ की ऊँगलियाँ घर ठुमुक-ठमक सीखना ;

वत्सल मुस्कानों की चान्दनी नहला गई। बगुले-सा.....

जब-जब मैं दूर गया आँगन के आर-पार

दो अँखियाँ आतुर-सी रंभाती द्वार-द्वार ,

फेनिल उच्छ्वास भरे उर लाती बार-बार

और मुझे आँचल से ढाँप दुग्ध धार-धार ;

दुग्ध-स्निग्ध आँचल की महक सिहरा गई।बगुले-सा....

बटुए के चिल्लर को बार-बार गिनती थी

बबुआ के गुड़-गुड़िया मोलकर किनती थी,

हर देवी-देवता से मन्नत और विनती थी

उसकी शिराओं में ममता उफनती थी ;

करुणा की भूरत की सूरत निखरा गई। बगुले-सा....

उचटों न नींद! मेरी थम जाती साँस है

मैया की खटिया वर्षों से उदास है ,

घर-आँगन-द्वार मगर, उनका एहसास है

पुरइन का पात स्पर्श, हरसिंगार हास है ;

सपने में कई बार आकर दुलरा गई। बगुले-सा.....

है बसन्ती शाम

है बसन्ती शाम, आओ ना नदी के घाट पर

प्यार की दो बात करके चले जाना बाट पर।।

हम पथिक हैं, तुम पथिक हो, हम थके हैं, तुम थकित हो

कुछ भरोसा हमें दे दो, कुछ दिलाशा तुम भी ले लो,

ओ सलोनी साँवली, मिलते हैं हम फिर हाट पर।। है बसन्ती.....

रोजमर्रे की चुभन है, चरमराया-सा गगन है

थक गया-सा मेरा मन है, पेट की जलती अगन है,

चुरा लो कुछ पल यहाँ से नाचते नयी थाट पर।। है बसन्ती.....

कुँई की ताजा कली है, यह कमल-वन में पली है,

पारिजातों की झरी है, सुर-सुरभि वासित भली है,

टिकोलों की महक, महुए की टभक, हम खाट पर।। है बसन्ती.....

महक उट्ठे पणष-जामुन, चैतियों की मधुर-सी धुन

करवटों की रात है सुन, पलक सपने रही है बुन

कूकती है कोयलिया, मीठे स्वरों की बाँट पर।। है बसन्ती.....

घर-घर दीप जले

राष्ट्र हमारा, एक हो प्यारा

दृढ़ संकल्प हो, व्रत हो न्यारा

शुभता के गगन तले

घर-घर दीप जले।

एक कर्म हो, एक मर्म हो

राष्ट्रप्रेम ही एक धर्म हो ,

एक शर्वरी एक भोर हो

एक अनुशासन, एक छोर हो ;

सूरज की किरणें नहलाएँ

पवन सुमन्द चले। घर-घर.....

नवल ज्योत्स्ना की छाया हो

दीप-शिखा की शुभ माया हो ,

दीप चतुर्दिक जगमग भास्वर

देता हो सबको नवीन वर ;

हम सबके स्वर्गिक प्रयास से

नवदल-कमल खिले । घर-घर.....

दीपों से नव आराधन हो

प्रमुदित मन प्रतिक्षण प्रतिजन हो ,

सकल मनुज-रक्षा का व्रत हो

दुख हो एक तो सुख शत-शत हो ;

ज्योति-स्नान की इस वेला में

रोग-शोक पिघले । घर-घर.....

माँ तेरा ये धानी आँचल

माँ तेरा ये धानी आँचल

कैसे हिंसा से लाल हुआ ,

सबने खोया अपना आपा

बुरा देश का हाल हुआ।

आज़ादी में फिर आज़ादी

मांग रहे थे वो थे कौन?

भारतवासी के प्रश्नों पर

क्यों रहती है संसद मौन ?

तार को ज्यादा खींचने वालों

ताल ही आज बेताल हुआ। सबने..

हम पुरुखों की आशाएँ हैं

कर्णधार हम इस युग के ,

भटक रहे हैं तपते दिन में

मृगतृष्णा जैसे मृग के ;

छोड़ कर्म अपने हिस्से का

किस पर कठिन कराल हुआ। सबने...

जोड़ रहे हो कैसे सपने

मोड़ रहे युग को किस ओर ,

पकड़ रहे हो किन छोरों को

हाथ में आते कैसे छोर ;

नभ में यों मुट्ठी न उछालों

समय आज विकराल हुआ। सबने..

यह अग्नि वर्षा किस पर है

जलने वाले घर के लोग ,

पीट रहे हम अपना माथा

ये कैसा विपरीत है योग ;

अपनों ने अपनों को नोचा

खुद से देश बेहाल हुआ । सबने.....

चन्दन - चन्दन

चन्दन-चन्दन प्यार हमारा

स्पंदन-स्पंदन तुम छायी ,

वन्दन-वन्दनवार सजे हैं

आ जाओ ओ मधुपायी ॥

सपनों ने ली है अंगड़ाई

मनोरथों की रुत आई ,

नव बसन्त ने तरुणाई में

तरल मिठास खिला लाई ;

पूर्वाई है तुम आ जाओ

दूब-चरण-रख हरजाई ॥ चन्दन-चन्दन....

पारिजात के परी लोक से

गंध सुमन्द है निथराई ,

सोनजुही, रजनीगंधा ने

सभी दिशाएँ महकाई ;

ऐसे में तेरी यादें ही

पल-पल करती अगुवाई ।। चन्दन-चन्दन....

तू सपनीली स्नेह-सरलता

तू जीवन की परछाई ,

तू मधु-कोमल रूप की रानी

मंत्रसिक्त तेरी तरुणाई ;

आवाहन है, मनभावन तेरी

दिशि-दिश में है लालाई॥ चन्दन-चन्दन....

साँस-साँस की तू है चपलता

पग-पग में है तेरी सरलता ,

शब्द-शब्द में अपनापन है

आश्वासन में स्निग्ध तरलता ;

व्यक्त भाव-सी आ जाओ न

पावन पुलक, प्रीति स्थाई ॥ चन्दन-चन्दन....

ओ! बसन्त के अग्रदूत

ओ! बसन्त के अग्रदूत कोयल गाओ न

मधुवर्षी कूकों से जीवन-रस लाओ न।

तृषित हो गया है जीवन, अमृत की चाह है

सपनीले आनन्द चतुर्दिक, जाग्रत कराह है,

मन में सौ विक्षोभ, चुन रहे सुख की कलियाँ

चलना था स्वर्णाभ पथों पर, भ्रमित राह है;

इस बसन्त में नयी रागिनी संग आओ न ।। ओ! बसन्त.....

तुम जीवन में सदियों से रस घोल रही हो

वन-उपवन में डाल-डाल पर बोल रही हो,

प्रेम-पीड़ की तुम अभिव्यक्ति, प्रेम-तृषा तुम

शत-सहस्र विरहिणियों के स्वर तोल रही हो;

मन-भावन, सबके पावन मन कर जाओ न ।। ओ! बसन्त.....

गाँवों के सुर-तान! शहर के द्वार भी आओ

तुम ऋतुपति के प्राण !! सृष्टि में प्यार भी लाओ,

हिय की कसक मिटाओ, नव-नव तान सुनाकर

गाकर-मधुमय गान, हृदय में स्नेह जगाओ;

अब के तो लाना बसन्त, पतझार भगाओ न ।। ओ! बसन्त.....

बंजारा गीत

मैं बंजारा, मैं आवारा

मेरा भी कोई नाम गढ़ो ना

दो पग मेरी ओर बढ़ों ना। दो पग मेरी ओर.....

सपने कितने पास मेरे भी

अपने कितने पास मेरे भी ,

मैं सदियों से ठौर ढूँढ़ता

न घर, न कोई आस मेरी भी ;

गर सबकुछ लौटाना है तो

पुरुखों का इतिहास पढ़ो ना। दो पग मेरी ओर.....

साँझ-सवेरे मन अकुलाता

पक्षी चहचह जब घर आता ,

टुट्टिट् चिढ़ियाँ करे सवेरे

सुर में सुर धर भरमन गाता ;

अगर गीत जीवन को दो तो

मानवता के शिखर चढ़ो ना। दो पग मेरी ओर.....

मैं यायावर चलता रहता

गंगाजल मैं बहता-बहता ,

मुझे न बाँध सका घर कोई

मैं फरीद कुछ रहता कहता ;

चाहो तो संग नाम जोड़ कर

भारत का इतिहास गढ़ो ना। दो पग मेरी ओर ....

सदियों ने मुझसे पाया है

सदियों ने ही दुःख ढाया है ,

फिर भी मैं तो मौन रहूँगा

देश-राग मुझ पर छाया है ;

गर मेरा कुछ करो भला तो

मुझ पर कोई दोष मढ़ो ना। दो पग मेरी ओर .....

तेरे बीच में मेरा घर हो

नील गगन तव, मेरे पर हों ,

तेरी पूर्वा, मेरी पछिया

संग बहे और एक स्वर हो ;

तेरे संग उत्थान मेरा भी

मिल शिखरों पर पैर धरो ना। दो पग मेरी ओर .....

फूलों से लकदक

फूलों से लकदक ओ कामिनी वासित सभी दिगन्त है,

तेरे मदिर सुगंध बदौलत मौसम यह श्रीमन्त है।

लचकदार फुनगी पर हरे श्वेत कुसुम का मुस्काना।

पूर्वैया में झूमझूम कर गंध पवन का मिल जाना,

रात-रात भर महक-महक कर साँसों में फिर घुल जाना

सब का ले आभार महक कर जन-जन में हिल-मिल जाना,

सदा प्रसन्न ही तुम दिखती हो, अनुकरणीय ये पन्थ है।। फूलों.....

तू संदेश है नव जीवन का, रात कहाँ सो पाती है

साँझ होते ही पोर-पोर में भर सुगंध परमाती है ,

मधु मधुकरी वृत्तिवाली मधुमक्खी आ मँडराती है

तुमको भी मधुदान उसे कर यह मनुहार तो भाती है;

त्यागवृत्ति से सारा जीवन सुख से करती अन्त है।।फूलों.....

तू हेमन्त की कुसुम कामिनी, तू फूलों में पटरानी

तेरा नाम सकल जगजाने, तेरा कहीं न है सानी,

तेरी गंध रात भर मह-मह कर जाती है पहचानी

सारी कुसुमगंध आगे तेरे मानो भरती है पानी;

तू चिर यौवन, तू चिर सुन्दर, अमर तेरा सीमन्त है।। फूलों.....

छेड़ो न मन के तार को

छेड़ो न मन के तार को

जीने के एक आधार को

जिसमें छिपा संगीत है

मेरे अनाविल प्यार को। छेड़ो न.....

क्या स्वप्न है मत पूछना,

क्या जागृति क्या मूर्च्छना,

किस बात की तकलीफ़ है

किस बात का है रूठना;

शब्दान्त है पीड़ा मेरी

एक अर्थ को, एक सार को। छेड़ो न.....

किस अर्थ जीवन भी तना

है अडिग ज्यों पत्थर बना ,

एक आग है, कुहरा घना

उस पार अमृत है सना ;

नापो न छोटे चरण से

आकाश के विस्तार को। छेड़ो न.....

एक राग है, एक आग है

विराग है, एक फ़ाग है,

एक विश्वमोहन रूप के-

हाथों अमृत, एक झाग है ;

तुम्हें चाहिए क्या तय करो

सार को, निस्सार को। छेड़ो न.....

शलभों-से या तो जल मरो

अलभों-से या तो छल करो,

शाद्वल बनो कि मरूस्थली

उबरो कि दलदल में गड़ो ;

है हाथ निर्णय सब तेरे

रख गुप्त, कह दो हज़ार को। छेड़ो न.....

एक बार और बढ़ो

एक बार और बढ़ो रोशनी की चाह लिए

कर प्रशस्त पंथ नवालोकित उत्साह लिए।

एक बार कर प्रयत्न अंध को मिटाने का

मरु में नव शाद्वल द्वीप सृज उछाह लिए।।

कैसी स्वतन्त्रता है भटके नर दाह लिए

कैसे तू जी सकेगा लोगों की आह लिए ,

बूढ़े और बच्चों की शत-शत कराह लिए

अग्नि-शिखाओं पर शलभों की दाह लिए ।

घाटियों में नश-नश की शीशे की पिघलन को

झेलोगे कैसे उत्ताप-शाप-हाह लिए ।। एक बार.....

जीवन है व्यर्थ, अर्थहीन, उद्देश्य बिना

शिक्षा असमर्थ है सार्थक सोद्देश्य बिना ,

रीति-नीति जीवन में लाए न त्वरा कभी

मानवता हो न जहाँ, व्यर्थ परम्परा सभी ।

कुहरे को चीर लाओ अमित आभ जीवन में

हो जाओ प्रकट देव घरती वराह लिए ।। एक बार.....

अक्षय है कोश अमृत का तेरे अन्दर

पीयूषी स्रग्धरा-तरंगें उच्छल सुन्दर ,

वाणी का ओज मौज सागर का उठता है

ऊर्जा-तरंग वह कि तम का दम घुटता है ।

करो शंखनाद यों कि शुभता का कमल खिले

मूर्च्छा से जागे जग बढे सत्य राह लिए ।। एक बार.....

ये कैसा जीवन-जग भूख से लड़ाई है

दंभ यह कि अबके मयूख पर चढ़ाई है ,

जीवन से चुन-चुन दुःख-दर्द को हटाना है

पौरुष भर कायर-प्रयत्न को मिटाना है ।

शुभ हो संकल्प, सभी मिल करें प्रयत्न यही

तिमिर हटे जीवन से, आए दिन सराह लिए ।। एक बार.....

सोन जुही - सी

सोनजुही-सी महके बहके प्रथम प्रणय की मीठी बात

चाँद चमकता, तारे टिम-टिम आखों में जागे भर रात।

किसने बाँहों में भरली है रातों की परछाई को

रोक न पाया क्षितिज जाल भी इस कपोत पुरवाई को ,

ऊँनीदी पनकों में किसने भर दी सपनो की बारात । सोन--

तृण-तृण मोती लिए मगन है, तरु-तरु फूलों का ले हास

मुग्ध उषा निज मुह निहारती नील-झील-दर्पण ले पास,

किसने मन के अमल मुकुर में लादी द्रुत लहरों की पाँत । सोन--

कोमल किरण छुअन से पुलकित खिले कमल के मृदुतम पात

भौरों ने आ चुपके पूछा कहो! बिताई कैसे रात ?

किसने कानों में चटखाए अलसाए गदराए गात।। सोन--

मन मेरा विस्तार ढूँढता रहा प्रकृति और नेहों में

अरुण उषा के विस्तारों में प्रणय-पात्र के गेहों में ,

मुझे किरण से उद्भासित कर दिया मनुज का मन अवदात ।
सोन--

भारत की हिन्दी है रानी

बलिपंथी की यह है जुबान

भारत की यह है आन-वान ,

सबकी है प्यारी, पहचानी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

कोटि-कोटि के मुख की भाषा

सबा अरब की यह अभिलाशा ,

कोटि-कोटि के मन की आशा

अभिव्यक्ति की यह सद्भाषा ।

भारत के जन-जन की वाणी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

हमने इसमें लोरी गाई

हमने यौवन की स्मृति पाई,

है वीर काव्य की अंगडाई

तुलसी, रसखान, मीरा बाई ।

इसमें कबीर-वाणी जानी

भारत की हिन्दी है रानी ।।

स्वातन्त्र्य-समर ललकारों से

भर दिया तीव्र हुंकारों से ,

बलिपंथी के उद्‌गारों से

है भरी ज्वलित अंगारों से ।

है विश्वविजय इसने ठानी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

यह दिनकर के हुंकारों में

छायावादी उद्‌गारों में ,

है प्रगतिवाद सुविचारों में

नव-नव प्रयोग नवाचारों में ।

समकालीनों से है सम्मानी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

यह जग को प्रेम सिखायेगी

दुनिया पर सत्वर छायेगी ,

विज्ञान-ज्ञान बतलायेगी

दुनिया को राह दिखायेगी ।

यह गौरव हिन्द का, वरदानी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

इससे विकास-पथ आलोकित

यह रूप धर रही समयोचित ,

संस्कृत का ज्ञान यहाँ संचित

जो नहीं, करेगी सब अर्जित ।

ब्रम्हाण्ड सुन्दरी यह वाणी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

इसमे वेदों का सार छिपा

इस पर शास्ता की बड़ी कृपा ,

इसमें तीर्थंकर-ताप तपा

है पंचशील का राग जपा ।

गांधी की यह है सत्वाणी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

पथ नहीं रोक सकता कोई

इसको न टोक सकता कोई ।

यह उल्का है, अंगारा है

यह स्वर्ग चढ़ रही धारा है ।

ममता - करुणा जानी-मानी

भारत की हिन्दी है रानी ॥

संघर्षों से उठ हरी-भरी

कोमल, कठोर और खरी-खरी ,

समयानुकूल रुख खूब धरी

भाषा हिन्दी गुण -रूप भरी।

इसका न कोई है शानी

भारत की हिन्दी है रानी ।।

आ जाओ

आ जाओ मेरे पास ओ साजन

सपनों के संगीत बजे हैं ,

रजनी में चाँद और तारों के

जगमग - जगमग दीप जले हैं ।।

झिलमिल - झिलमिल आशाओं के

पार खड़े क्यों मुस्काते हो ,

अब तो पकड़ो मेरी बाहें

आमन्त्रण दृढ ठुकराते हो ।

भींगी पलकें, गीले-से स्वर

तुम्हें सुनाते पीड़ चले हैं॥ जगमग -- -

मंत्रमुग्ध कुसुमों के बिरवे

न्यारे - न्यारे चटुल लगे हैं ,

मादक-मत्त- सुगन्ध सुवासित

मलयानिल आकण्ठ पगे हैं ।

ललचाती मैं, बलखाती हूँ

आज हृदय उल्लास तले है।। जगमग --

आ रच दो कुछ ऐसी माया

साँसों में मधुमास आ जाए ,

तेरे स्पर्श से रोम-रोम

घर-आंगन का उल्लास समाए ।

दीप देहरी चमक उठे फिर

हृदय मगन, नत प्रीति पले हैं।। जगमग---

सावन गीत

रिमझिम रिमझिम बरसे सावन

प्रिय बिन दिन-दिन तरसे है मन

नेह की गाँठ न खुले मेरी सजनी ॥ रिमझिम---

उमड़-घुमड़ कर बादर आया

पूवैया चहुँदिस सरसाया ,

नेह-निमन्त्रण देवे कोयलिया

पियबिन मन सावन तरसाया ;

जग झूमे न मन झूले मेरी सजनी || रिमझिम---

प्रेम की प्यास है सावन - सावन

मिलन की आस है यौवन-यौवन ,

घिरा आकाश है जलधर-जलधर

सूना आंगन मन का प्रतिक्षण ;

रातभर नयन अधखुले मेरी सजनी।। रिमझिम---

ये **गुलाब द्वारे का**

ये गुलाब द्वारे का

ये गुलाब बाड़े का

मन की उदासी हर लेता है

तन में नव स्फूर्ति भर देता है।।

लचकीली डालों पर

फैले दीवालों पर

संपनीले रंग भर लेता है गालों पर ,

मस्ती में झूम रहा

आपस में चूम रहा

करता इशारा मस्ती भरे चालों पर ;

मन में सौ रंग घोल देता है

बिन बोले बात बोल देता है।। ये गुलाब....

भींनी-सी इसकी महक

जाती है बहक - बहक

झूम-झूम डोलता है डालों पर ,

साँसों के तारों में

महके हजारों में

पोर-पोर छाए हैं मतवालों पर ;

जी में आनन्द भर देता है

मन का उल्लास छलक लेता है ।। ये गुलाब...

ऐसा क्यों होता है

ऐसा क्यों होता है जग में

पल में रोते पल में हँसते

सपने आँख भिंगोते जग में ।।

आस की डोर पे चढ़ते प्रतिपल

साध संतुलन, बढ़ने छल-बल

अजब जमूरे चल रे ! चल-चल

नाच दिखा, खाएगा क्या कल ?

पेट की अगन बुझाने आए

पग-पग पर व्यवधान हैं मग में। ऐसा क्यों --

हँसी है गायब अब जीवन से

रहा न सरोकार कण-कण से ,

कुत्सा के पस रिसते व्रण से

मजा आ रहा है क्रन्दन से ;

मानवता की बलि चढाकर

कैसे साध रहे सुख डग में ।। ऐसा क्यों---

देख चिड़ैया उड़ती जाती

यायावर का गीत सुनाती ,

यहाँ, वहाँ, कहाँ हो आती

चलना केवल है दिन-राती ;

हम अनन्त के पथिक न भूलो

क्यों है तुनक, बैर रग-रग में ।। ऐसा क्यों --- -

गालो प्यारे

गीन बने तो गालो प्यारे

सपनों के बेरंग फलक पर

स्नेहों के रंग डालो प्यारे ।।

धन-दौलत तो आनी-जानी

जग-राहें जानी-अनजानी ,

राह चलो, मंगल पथ चुनकर

प्रीति डोर एक सबने मानी ;

शलभ न बन, दे स्नेह शिखा को

संग-संग हृदय उछालो प्यारे ।। गीत बने ---

मृगतृष्णा में कभी न जीना

मृषा गरल-घट व्यर्थ न पीना ,

मगर तृषा मत रखना पल भी

झूठ जो हो, मत तानों सीना ;

कौन बड़ा है, कौन है छोटा

सब को गले लगालो प्यारे ॥ गीत बने --

जीवन बहता नदिया-पानी

छल-छल, कल-कल राह पुरानी ,

अपने छद्मों की लहरों से

बाधित मत कर चाल सयानी ;

करुणा परसो, पल-पल सरसो

जीवन यही बना लो प्यारे ॥ गीत बने --

सच कहता हूँ कभी न रोना

उछलो मत मिल जाए जो सोना ,

सुख-दुख तो एक छाँव ढ़लती

दुख में कभी न नयन भिगोना ;

दूजे के दुख में डूबो यों

तन-मन सभी भिंगा लो प्यारे ॥ गीत बने ---

राग भी ले लो

राग भी ले लो, फाग भी ले लो, लौटा दो अनुराग मुझे

भाग भी ले, विराग भी ले लो, लौटा संग-जीवन-राग मुझे ॥

शाद्वल जीवन हो, विह्वल मन हो, करुणा हृदय निवास करे

उपवन तन हो, मलय श्वसन हो, दिव्य सुगंध सुवास करे ,

मृदुता उच्छल हो, मधुमय पल हो, प्रतिक्षण मुदित सुहास करे

अगर गंध हो, मधुर छन्द हो, मन स्वच्छन्द विकास करे ।

जड़ता ले लो, अमरता देदो, लौटा दो सुधा-तड़ाग मुझे।। राग---

हर्ष भरे, उत्कर्ष बड़े हों, स्पर्श हरे कर जाय मुझे

वर्ष जड़े, आदर्श बड़े हों, संघर्ष बड़े कर जाय मुझे ,

स्वप्न सजे हों, प्रीति भरे हों, नीति भरे कर जाय मुझे

अनुशासन हो, सच भाषण हो, भीति-परे कर जाय मुझे ।

आकर्ष भी ले, अमर्ष भी ले लो, लौटा कुसुम-पराग मुझे ॥ राग---

छंद भरे, आनन्द बड़े हों, कवितामय जीवन हो जाए

अभिनन्दन हों, नितवन्दन हों, चन्दनमय उपवन हो जाए ,

शब्द हरे हों, भाव भरे हों, करुणामय जीवन हो जाए

आश्वासन हो, मृदुभाषण हो, मंगलमय कण-कण हो जाए ।

सुविधा ले लो, दुविधा ले लो, लौटाना नहीं विहाग मुझे ॥ राग---

तुम न कहो

तुम न कहो अब मुझको साजन

मैं न कहूँ आँखों को खंजन ,

अब न हमारे हृदय में बसो

मैं न तेरे आऊंगा आँगन ।।

तुमने चटखाए कुछ धागे

असहज प्रश्न रखे कुछ आगे ,

सपनों के झिलमिल तारों के

मिटा दिए नयनों के तागे ।

कब तक दूँ मैं छल को छाजन

व्यथा-वारि का बनूँ क्यों भाजन ।। तुम न---

आवारा क़िस्सा बनते हैं

हम दोनों हिस्से बनते हैं ,

कौन मिटाए कालिख रेखा

स्वर्ग-नर्क जिससे बनते हैं।

स्वर्ण विहान था, स्वर्गिक आँगन

छोड़ चला बनकर दुर्भाजन ॥ तुम न---

मत करना फिर प्यार किसी से

मत भरना संसार किसी से ,

मन-वीणा को स्वर मत देना

मत करना मनुहार किसी से ।

कहाँ मिलेगा सत्य, भला जन

कहाँ मिलेगा करुणा का क्षण ॥ तुम न ---

तुम पिपासा

तुम पिपासा हो मेरी

मैं हूँ पिपासित प्राण,

तुम सुगंधि पुष्प की

मैं दिव्य वाला घ्राण।।

तुम अलभ हो दीप मेरे

मैं शलभ-सी जान ,

तुम मचलती हवा वासित

मैं तरुण उद्यान ।

मैंने तेरा अनुशरण कर

कर लिया सन्धान ।। तुम पिपासा----

तुम धरा की गंध-वर्षा

महक सौंधी को हूँ तरसा ,

तुम महक अमराइयों की

मैं मधुप-सा रहा हरषा ।

समय का कोई भान कब था

कर रहा मधुपान ।। तुम पिपाषाण --

मैंने जब-जब तुम्हें देखा

भोर की तुम स्वर्ण- रेखा ,

तुम लजीली सोन लतिका

एक ठिठकन-सा है देखा ।

रूप तेरा तपा कंचन

याकि स्वर्ण - विहान ॥ तुम पिपाशा ---

बन जाओ मेरे मीत

खींच दो एक प्रेम-रेखा

भर बाँसुरी में गीत ,

सुगम कर दो ज़िन्दगी

बन जाओ मेरे मीत ॥

खेत-सी लहराओ आकर

मेघ-सी छा जाओ आकर ,

सुमन-वन मधुमास जैसे

कमल में हो बास जैसे ।

सभ्यता के इस मिलन को

दो नया संगीत ।। सुगम कर ----

स्वप्न-सी खुशियाँ बिखेरो

प्रेम कर मुझसे घनेरो ,

अर्थ दो इस बाँसुरी को

स्वर सिखा इस बेसुरी को ।

प्रीति का इतिहास रचकर

कर सुलभ नव जीत ॥ सुगम कर---

शक्ति का संचय करो कुछ

प्रेम का जय-जय करो कुछ ,

खींच लो अनगिनत पीड़ा

स्नेहवर्षा हो, न व्रीड़ा ।

शान्त कर दो स्पर्श से निज

बदल दो सब रीत ।। सुगम कर---

भींग रहा गाँव-शहर

पूनों की चान्दनी में भींग रहा गाँव-शहर

फिर भी अकुंठ जलन उठती है आठ-पहर ।।

सारे संवादों का सार यही बचता है

मेघों में छुपकर षड्यंत्र कोई रचता है ,

भींगता है तन मगर मन में है प्यास बड़ी

नदियों का भी प्रवाह भँवर-भँवर रचता है ।

बिजुरी की चमक दे प्रकाश, पर डराती है

हर चमक में तड़क - धड़क जाती है ठहर-ठहर ।। पूनो की --

जिन्दगी सहार बनी जाती संवेग बिना

चाक क्या रचेगा सृष्टि सुघड़ एक बेग बिना ,

मन से मधुमास का उछाह ही चला गया है

प्राणहीन हो गया सम्बन्ध भी दरेग बिना ।

श्रान्त, शिथिल उत्सवी समाज आज भीतर से,

शतखण्ड दरकी शीशे-सा क्यों लहर-लहर ।। पूनो की---

मौसम में सजती हैं फूलों की नव क्यारी

रंगों में बोल उठी डालों पे कलि प्यारी ,

गंधकोष भौरों को आमन्त्रण देता है

हर ओर सजती है सुषमा की छवि न्यारी ।

पर लुटती क्षणभंगुर जीवन-रति पल-पल में

आज अगर तुझ पर तो कल मुझ पर कहर - कहर ॥ पूनो की--

रोटी की मर्यादा जीवन में ज्यादा है

सपने छलेंगे सब, सच का ही प्यादा है ,

कमर तोड़ मिहनत भी लाती न जीवन-रस

खुशीभरी ज़िंदगी का संसद का वादा है ।

अन्नदाता सल्फ़ास खाने को विवश यहाँ

एक मुक्ति-मार्ग जहाँ बचता है ज़हर-ज़हर ॥ पूनो की----

नये स्वप्न के पंख लगाकर

नये स्वप्न के पंख लगाकर उड़ जाऊँ तो दोष न देना

इन लहरों में भँवर - भँवर बन खो जाऊँ तो दोष न देना।

रात गगन में तारे चमके चाँद बदरिया से निकला है

कुसुम-कोश में बन्दी भँवरा और सुबह बाहर निकला है

मैं मृदु मधु-तानों पर तन्मय हो जाऊँ तो दोष न देना। नये---

महुआ-आम की डालें फूलीं, बहती हैं मदमत्त हवाएँ

खूब सुखद -सई रातें लगतीं बेला खुश्बू जब बिखराए

दिव्य ढूँढ़ता केश-सुरभि तेरी खो जाऊँ तो दोष न देना । नये---

ऊनीदी पलकों पर तेरी मूरत मधुर उतरने लगती

अधर, अधर-धर तू गोरी-सी गोल बाँह में भरने लगती

प्रेम - तृषित मैं मृगमरीचिका हो जाऊँ तो दोष न देना । नये.....

सपनों का संसार सजा है जीवन की सच्चाई बीच

यह करतब का पाठ पढ़ाती, वह भी बरबस लेता खींच

द्विधाग्रस्त, तेरे सम्बल को ललचाऊँ तो दोष न देना | नये.....

आयेंगी नित यादें तेरी

अब के सौ-सौ फूल खिलेंगे मादक बहार में,

आयेंगी नित यादें तेरी पछिया बयार में।

घर-आंगन जब लीपेंगी गावों की गोरी

सीधे-सच्चे प्रश्न करेंगी भोरी-भोरी ,

महुआ जब बिछ जायेगा बागों में चूकर

बतिया नहीं, न पाँती, पतिया कोरी-कोरी ।

जब फागुन का डफ दिलों को दहलायेगा

आयेगी तब याद तेरी नदिया कछार में || अब के ---

जब कलियों को बाग लगेगा सूना-सूना

जब अलियों का दर्द बढ़ेगा दूना- दूना ।

जब साजन की प्रीति घनेरी हो जायेगी

पल-पल हो दुस्वार, कठिन हो जीना-ऊना ।

जब कंठों में प्यार लिए मचलेगी कोयल

आऊँगा निश्चय तेरे मन के सम्हार में || अब के----

फगुनाई-सी हवा फिरेगी मदमाती-सी

पल-पल जलता हृदय, टीस हो एक बाती-सी ।

कितने सपनों की तरंग जब उठे, मिटे फिर

धरती की छाती भी लगती, धक् छाती-सी ।

मन्मथ जब उन्मथ कर मनको व्यथित करेगा

मैं भरूँ तुझे आलिंगन में, आबद्ध प्यार में ।। अब के----

कब सूरज आयेगा

नीति का लिबास लिए

सत्य का प्रकाश लिए

कौन जग के जीवन पर छायेगा

कब सूरज आयेगा

कब सूरज आयेगा ।

धद्म से भरा है जगत

अधर्म की चढ़ी है परत

कर्म ही छला गया है

मर्म ही बिंधा है सतत;

ऐसे में ले मशाल

हाथों अपने विशाल

सब का नेतृत्व लिए

कौन अग्र धायेगा। कब सूरज....

दानव को जो ले रोक

रावण को सके टोक

कायर प्रयत्नों के

विष धर के हो अशोक ,

गुरु गर्जन याकि मन्द्र

नील कण्ठ! भाल चन्द्र !!

जग को कर दलमलित

ताण्डव कब छायेगा। कब सूरज.....

युग की हो डगर एक

समता की लिए टेक

मानवता फ़र्ज़ बने

आचरण भी बने नेक ,

सत्य-शील-स्थापन को

कर्म-शुचि शासन को

युग स्रष्टा जैसा युग -

पुरुष कब आएगा। कब सूरज.....

तिर्यकता नष्ट हो

पथ-बाधा भ्रष्ट हो

सीधी हो जीवन -गति

कुछ तो कम कष्ट हो,

सरल सुलभ आसों का

सीधे विश्वासों का

कब अगम तरंग - भरा

सागर लहरायेगा। कब सूरज.....

जग बसन्त है

तू जब आया जग बसन्त है

तू जब गया अंधेरी रतियाँ

मेरे मन की प्रीत न जाने

धड़क रही तेरे बिन छतिया ।

तू जब आया तो सावन ने

बिजुरी से श्रृंगार कर लिया,

ऋतु बसन्त ने शत फूलों से

क्यारी-क्यारी प्यार भर लिया,

तेरा आना, अधिक लचीली

साँसों ने संस्कार भर लिया,

मन्द- अमन्द डगों से क्षितितल,

पर, नव-गति-लय-ताल भर लिया,

पर माती साँसों में प्रतिपल

घुल-मिल-कर रह जाती बतिया । धड़क रही ----

छलक रहा मधुकलश हृदय का

लरज रहा सप्तस्वर गान,

सात सुरों की सप्तदीप्ति में

उद्वेलित-से मेरे प्राण ,

मैं पलकों को निर्झर जल से

तुझे कराऊँ सिक्त- स्नान

आओ! हे प्रिय मन वृन्दावन

हुआ चाहता, मुदित जहान,

तेरा चिन्तन, वन्दन तेरा

आओ, लगा लो अब तो छतिया ।। धड़क रही ----

सपने सलोने

सपने सलोने आ गए

आके हृदय में समा गए,

मेरी जिन्दगी को भा गए

मेरा मन-मयूर नचा गए।

मेरा आईना तेरी ज़िन्दगी

तू जो देवता तो मैं बंन्दगी

तू लालिमा मेरे भोर की

ये है हँसी ज्यों इजोर की

तेरी गहरी आँख में खो गया

तेरे नूर-ओ-हुस्न समा गए । सपने ----

तेरे बोलने की अदा ग़ज़ब

तेरे प्यार में है सदा ग़जब

तेरे हुस्नो - नूर की सादगी

तेरे रूह का जलवा ग़ज़ब

मेरी शाम को कर दे हसीं

सब मिल गया, तुझे पा गए । सपने ----

मेरी क़ायनात है तू ही तू

मेरा सब-ए-हयात है तू ही तू

मेरे दिल की बात है तू ही तू

मेरी सुब्हो - रात है तू ही तू

सुरूर-ओ-सब्र है तू ही तू

तू वजूद में मेरे छा गए । सपने ---

मुझे उस जहाँ की तलाश है

जहाँ चाँद-ओ-सूरज पास है

बातें चले तारों में जब

उस ज़िन्दगी की आस है

मुझे इक रजामन्दी तो दो

मेरे लफ़्ज़-ओ- जूस्त डिगा गए। सपने ---

भुला दो जीवन का छल-छन्द

प्यार में कोई शर्त न हो तो

जीवन यों ही व्यर्थ न हो तो

पल-पल का आजाए आनन्द

भुला दो जीवन का छल-छन्द ।

समुद चलेगी जीवन-नैया

मस्त बहेगी यह पूर्वैया,

चुस्त रहो जो ओ! खेवैया

ललकारा दे हे-हे हैया,

इस बहाव में चलो संग तुम

मिटा कर सारे दुविधा-द्वन्द्व । भुला दो----

सावन आया ठमक-ठुमक कर

बिजुरी खिली सुरेख चमक कर

एक स्वर्गिक संगीत टपक कर

वर्षा फुहार, फिर झमक-झमक कर

नाचो प्रिय कजरी के धुन पर

छुई-छम-छम-छपाक सानन्द ॥ भुला दो----

भँवरों की चहुँदिस गूँजन है

अमृत-सिद्धि का ज्यों पूजन है

डाल-डाल कोयल कूँजन है

श्रीसूक्त की अनुगूँजन है

तुम लक्ष्मी, आलक्त चरण से

विचरो घर- उपवन में स्वच्छन्द । भुला दो ---

एक राग हो तेरा - मेरा

खड़ा न हो फिर कोई बखेड़ा

हो जीवन खुशियों का डेरा

तमहर-प्रकाश भर जाय घनेरा

तुम दीपक की लौ बन आओ

जीवन में प्रकाश कर बन्द || भुला दो .....

छेड़ो न मन के तार को

छेड़ो न मन के तार को

जीने के एक आधार को,

जिसमें छिपा संगीत है

मेरे अनाविल प्यार को।। छेड़ो न ---

क्या स्वप्न है, मत पूछना

क्या जागृति, क्या मूर्छना,

किस बात की तकलीफ़ है

किस बात पर है रूठना,

शब्दान्त है पीड़ा मेरी

एक अर्थ को, एक सार को।। छेड़ो न...

यह व्यर्थ जीवन भी तना

है अडिग ज्यों पत्थर बना ,

एक आग है, कुहरा घना ,

उस पार अमृत है सना ,

नापो न ओछे चरण से

आकाश के विस्तार को ।। धेड़ो न----

हृदय-वीणा बज रही

कविता कुमारी सज रही

सोलह सिंगारों से सतत,

पायल छमाछम बज रही

हृत्ताल में मन खो रहा

खोलूँ न अन्तस द्वार को ।। छेड़ो न---

एक राग है, एक आग है

एक भाग है, एक फाग है,

एक विश्वमोहन रूप के हाथों -

अमृत, एक झाग है,

तुम्हें चाहिए क्या तय करो

सार को, निस्सार को । छेड़ो न...

शलभों-से या तो जल मरो

अलभों-से या तो छल करो

शाद्वल बनो या मरुस्थली

उबरो कि दलदल में गड़ो

हैं हाथ निर्णय सब तेरे

रख गुप्त, कह दो हज़ार को।। छेड़ो न...

यह सुगंध अपनी बगिया की

यह सुगंध अपनी बगिया की

कल - कल ध्वनि अपनी नदिया की ।

सुमन मनोहर सने परागों से महकाए

तितली की रंगीन होड़ है, मन भरमाए,

सात सुरों से सप्तसिन्धु-धारा लहराए

सावन के टिप-टिप में शाश्वत स्वर मुस्काए,

बादल के अवगुण्ठन से विधु मन ललचाए

आती याद पहिल पतिया की ।। यह सुगन्ध----

खुलो तो ऐसे पोर-पोर मन के खुल जाए

चलो तो ऐसे भोर-समय किरणें धुल आए

जलो तो ऐसे जन-मग, अग-जग खिल-खिल जाए

फलो तो ऐसे जीवन का रस घुल-मिल जाए,

जीवन का उत्कर्ष हो ऐसा सब तुल जाए

छायी सुरभि तेरी बतिया की ।। यह सुगंध----

राग-राग में जीवन का स्पन्दन छाए

बाग-बाग में भँवरों का ये गुञ्जन भाए

ताग-ताग में स्नेहों का बन्धन आ जाए

जाग-जाग में प्रिय का ये अभिनन्दन गाए

प्रतिपल करो प्रेम का ये वन्दन ललचाए

हूक बनी अब तुम छतिया की ।। यह सुगंध-----

किसने छेड़ दिया लहरों को कर अभिवादन

किसने घेर दिया नहरों को, कर आच्छादन

किसने हेर दिया गहरों को कर आस्वादन

किसने टेर दिया बहरों को, स्वर कर वादन

किसने स्वप्न दिया चेहरों को कर आराधन

यादें हैं बस अधरतिया की ।। यह सुगंध----

जानूँ ना मैं प्रीत पुरातन

जानूँ ना मैं प्रीत पुरातन

जानूँ ना मैं इह जग-जीवन,

एक जानता हूँ मैं तुम्हारे

प्रेम भरे मुस्कान

प्यार का करो सदा सम्मान ।

जीवन नहीं खिलौना कोई

यह न हाथ भिंगोना कोई,

यह है प्रेम भरा क्षण-क्षण व्रत

आकुल नैन का रोना कोई,

छल कर नहीं दुराओ मुझको

मन का रोता अभिमान । प्यार का...

शलभ-भाव है पोर-पोर में

उधर छोर से इधर- छोर में,

मादकता चहुँओर बह रही

सात्विकता मन की हिलोर में,

यों न लुटाना सुधा कहीं पर

समझ उसे प्रतिदान । प्यार का ---

पूर्वैया बह चली बसन्ती

आकुल मन है ओ रसवन्ती,

क्यारी-क्यारी फूल खिले हैं

तू भी तो गा 'जय-जय-वन्ती',

शुभ्र ज्योत्स्ना में पल-पल मधु

का कर दो शुभ दान । प्यार का...

इन मेघों से उतर भी आओ

बिजुरी- रेह सरीखे छाओ,

हृदय-शिखर-घाटी-घाटी में

वंशी-सी मधु तान सुनाओ

मधुकंठी के मधुतानों से

हो अनुगूँजित मन - प्राण। प्यार का....

विनती बारंबार

अब तो सारे सपने झूठे

अब तो सारे अपने छूटे ,

किन राहों से चलूँ बता दो

मुझे करुणा का दो उपहार

यही है विनती बारंबार ।

जीवन कितना झूठा-सच्चा

जान रहा हर बच्चा-बच्चा ,

सपनों की झूठी राहों पर

खाया पल-पल मैंने गच्चा ,

दुरभिसन्धि को भी झुठला दो

तेरे रूप अनेक हज़ार । मुझे दो.....

वर्णों को मैं तिर पाया हूँ

चरणों में तेरे आया हूँ

मैं वह शलभ दग्ध पंख हैं

खुद विपत्ति में घिर आया हूँ ,

किसे वेदना आज सुनाऊँ

किसको मेरी है दरकार । मुझे दो ...

जीऊँ तो कर के जन सेवकाई

मरूँ तो लोग बस करे बड़ाई

इतना तो वरदान दो मुझे

कभी न आए मन निठुराई

शब्दों के बागों में प्रतिपल

संचित भावों का सार । मुझे दो...

जब कृपाण से डर न लगे तो

जगद्वाण से मन न विंधे तो

शब्दवाण का हो न असर जब

इस जहान में मन न पगे तो

मुझ पर करो कृपा की वर्षा

कर दो मेरा उद्धार । मुझे दो.....

हिरणी की-सी

हिरणी की-सी चाल मेरी आँखों में है

जूही की-सी देह-गंध हर साँसों में है

हरसिंगार-सी हँसी तेरी दिन-रातों में है

पल-पल तेरा अहसास मेरी बातों में है।

बिजुरी बिन बादल का क्या अस्तित्व कहो तो

बिन सुगंध कमलों का क्या व्यक्तित्व कहो तो,

निर्झर बिन शिखरों का क्या व्यक्तित्व कहो तो

कोयल बिन मधुमास कहाँ अभिव्यक्त कहो तो ।

तेरे बिना है जीवन-नैया सूनी मेरी

डगमग इधर-उधर लहरों के घातों में है || पल-पल तेरे---

कह तो लो, पर एकाकी जीना दूभर है

खुशियाँ नहीं, उदासी आती पर सत्वर है,

मन-पाखी का पंख ही जैसे गया बिखर है

विचलित मन यों सोचहीन गति शिखर-शिखर है।

पर तेरा निक्षेप चरण लय-ताल भर दिया

हरी-भरी धरती निखरी रंग सातों में है || पल-पल----

मैं हूँ तृषित-चिरातुर तो तुम ही बादल हो

मैं हूँ मरूभूमि तो उस पर तुम शाद्वल हो,

मैं पतझर जीवन में तुम ही नव कोंपल हो

मैं तमसावृत रात, उष: लाली उच्छल हो।

कितना धरूँ धैर्य, जीवन ही ये पिच्छिल है

मत पूछो, एक टीस मेरी हर गातों में है।। पल-पल...

चल साथी

रह-रह अनजानी राह बुलाती, चल साथी

इस पथ मिलेंगे संगी-साथी, चल साथी

क़दम-क़दम कस कदम को धरना, चल साथी

कर्म का पथ है फिर क्या डरना, चल साथी ।

नहीं डरेंगे हम विपदा से, तने रहेंगे

कितनी भी पिच्छिल राहें हों, बने रहेंगे,

लाख चुरा लो नज़र न हम अनमने रहेंगे

अपने तो दो हाथ भले हम बने रहेंगे ।

क्यों रूकना इस पार, चलो उस पार रहेंगे

अब सीने पर दाँव न भाती, चल साथी ।। कर्म का...

शिक्षा हो, अनुशासन हो, हो काम हाथ को

घर हो, अन्न-जल, स्वच्छ हवा हो अनाथ को,

समता-ममता हो, कविता वाणी सनाथ को

जीवन-लय हो, सुखमय वय हो हरेक साथ को।

आओ मिल अनुशासन का नव पर्व मनाएँ

ससुख साथ हो मानव जाति, चल साथी ।। कर्म का ---

छलना को मिल दूर करेंगे, सुख बोयेंगे

बनें सहारा, हम दोनों सुख-दु:ख भोगेंगे,

हम जो चले तो फिर शिखरों पर ही विलमेंगे

हम यायावर, हम आशाभर, हम सम्भलेंगे ।।

गिरते जो नर वही सम्हलते, हम सँवरेंगे

गिरे उठो, फिल चलो सम्भल गति, चल साथी । कर्म का ----

खुद से भी मातृभूमि बड़ी चीज है

खुद से भी मातृ-भूमि बड़ी चीज है

मातृ-भू पर स्वयं को मिटा दीजिए

कितने संकट न झेले, सही यातना

वाण-शय्या न फिर से बिछा दीजिए ।।

छद्म वाणों की वर्षा चलेगी न अब

छद्म आश्वासनों की गलेगी न अब

तन के हम हो गए हैं खड़े विश्व में

छद्मनीयत की छाया पड़ेगी न अब

जग गए देशवासी, जगा देश है

विश्व हुँकार से डगमगा दीजिए ।। खुद से ...

द्रौणि, एकलव्य फिर से न होगा यहाँ

भव्य समता का निर्माण होगा यहाँ

चल पड़ा रथ महापथ के निर्माण में

हर सवेरा नया डग भरेगा यहाँ

तुम भी सम्भावना एक रचो स्नेह की

अमृतोपम सरलता से छा दीजिए । खुद से---

देश यह राम का, देश यह श्याम का

देश यह महावीर, शाक्य भगवान का

भूमि गाँधी-अहिंसा की, सरदार की

देश बलिदानियों की बड़ी आन का

अब न झुठलायेंगी उनकी क़ुर्बानियाँ

अश्रु सम्मान में तो गिरा दीजिए ।। खुद से---

हमने वादे किए पर निभाए नहीं

हमने संकल्प के राग गाए नहीं

हमको जाना था रफ्तार से दोस्तो !

देश का ही सबक सीख पाए नहीं

देश-उत्थान का दीप अब हाथ में

देश का पथ हरेक जगमगा दीजिए ॥ खुद से.....

नौनिहालों के आँसू गिरेंगे न अब

शक्ति से सच हो आहत मिटेंगे न अब

अस्मिता द्रौपदी की न लुट पायेगी

अहिल्याओं को 'वे सब' छलेंगे न अब

जो हुआ, भूल जाओ समझ स्वप्न था

इस चमन को बसन्ती हवा दीजिए ।। खुद से-

जीवन के कुछ तो अंगारे

जीवन के कुछ तो अंगारे चुनकर ले जाने होंगे

कलियों के चुभते दुःख सारे चुनकर ले जाने होंगे

इन गीतों में तेरी वेदना भरकर गाना ही होगा

तुझ में छुपे हुए भय सारे चुनकर ले जाने होंगे।।

अब कविता का दाय बढ़ गया बोझ बढ़ गया कान्धों पर

सारा राष्ट्र टिक गया आकर बहशियों और अन्धों पर

चारों तरफ़ अजब-सी छाया, हर करतब छल-छन्दों पर

दुश्मन के मंसूबे सारे चुनकर ले जाने होंगे। जीवन के .....

आज अनोखा समर हो रहा हर पिछले गलियारों से

टुकड़े-टुकड़ हुई लाश है अपनों की तलवारों से

अजब अनोखा लोकतन्त्र यह भरा हुआ हथियारों से

अमनदेश के दुःखड़े सारे चुनकर ले जाने होंगे। जीवन के .....

भूखी, अधनंगी है जनता भगत, आज़ाद, सुभाषों की

जन्मा नहीं जो पोंछे आकर आँखें दुखी-उदासों की

प्रतिदिन हत्या होती अपनो ही से अब विश्वासों की

छिपे नाग नर में ये सारे चुनकर ले जाने होंगे। जीवन के---

चाँद भी उगता सहमा - सहमा तारे भी बिदक - बिदके

हुआ नरम सूरज जो पक्का था अपने धुनके - ज़िद के

धरती भी सहमी लगती है अपने पुत्रों से छिद के

दहशत के ये शोले सारे चुनकर ले जाने होंगे। जीवन के.....

लोकतन्त्र फिर भरमाया तो एक दिन पछताना होगा

जनता के तीखे प्रश्नों का उत्तर बतलाना होगा

तुमको खुद बारूदी जाला सिमट दूर जाना होगा

साथी उन्मादी ये सारे चुनकर ले जाने होंगे। जीवन के...

मैं उनका आकाशदीप जो मन की व्यथा सुना न सके

उनकी मैं आवाज़ जो लब से अपनी कथा सुना न सके

मैं उनका संगीत जो क्षणभर जीवन में हँस, गा न सके

सारी जड़ता, सपने हारे चुनकर ले जाने होंगे। जीवन के--

वज्र-सा मत गिरो

वज्र-सा मत गिरो ज़िन्दगी पर

फूल-सा मुस्कुराना भी सीखो

अग्निवाणों से मन को न बेंधो

स्नेह-अमृत पिलाना भी सीखो ।

जिन्दगी कम परीक्षा न लेती

मुस्कुराने का अवसर न देती,

टूटते हैं सतत स्वप्न सारे

वह सम्हलने का एक वर न देती,

हौसले की जगह तुम हताशा

मत भरो, ओज लाना भी सीखो । अग्नि----

चाहतें कम न लाती हैं मुश्किल

हर किसी पर मचलता युवा दिल,

भूख मिटती मगर रोटियों से

होंठ जाते हैं बेवश के सिल-सिल,

तुम जवानी का तो मोल समझो

फ़र्ज़ कुछ तो निभाना भी सीखो । अग्नि----

जल रही है अभावों की ज्वाला

जवानी पी रही ख़ूँ का प्याला,

रोशनी के लिए जो मचलते

वे अंधेरों का होते निवाला,

क़तरा भर रोशनी के लिए तुम

अस्थियाँ निज जलाना भी सीखो । अग्नि....

कोई दो बोल सुनने को प्यासे

कोई रोटी की मूरत तराशे

कोई पानी-सा पैसा बहाता

कोई कौड़ी को भरता उसाँसें

तुम न इतनी कृपणता दिखाओ

जग के हित जगमगाना भी सीखो । अग्नि----

घूरते हैं चतुर्दिक लुटेरे

है बहस बीच अब तेरे-मेरे

वे सुबह की किरण बाँट लेंगे

लूट लेंगे आदम के बसेरे

आदमीयत बचाने की ख़ातिर

ज्वाल-जीवन बनाना भी सीखो । अग्नि---

जीत के अब गीत गाओ

जीत के अब गीत गाओ

नव उदय संगीत गाओ

सुरभि - संगम- स्फीत गाओ

नव सृजन है, मीत गाओ ।

अमित कोलाहल हुआ है शान्त

क्षुभित हलाहल हुआ है क्लांत ,

शब्द संयम में बँधे अब, सत्य

भाव-सर निश्चल हुआ है श्रान्त ।

अब उठा आलोकधन्वा, तान सर,

चीर तम, नव गीत गाओ ।। जीत के .....

राजहंसों के ये जोड़े उड़ रहे हैं

बादलों के चपल छौने तिर रहे हैं ,

छवीली-सी हो गयी है साँझ प्यारी

जलद-चल-दल सूर्य पर घिर-घिर रहे हैं ।

सुखद यामा बीत जाए, भोर का फिर

शान्तिमय, संगीत गाओ।। जीत के ...

हर प्रहर अनमोल है, इसको न भूलो

हर लहर संदेश नव, शक़ में न झूलो ,

हर सहर नव चेतना का गीत लाता

हर सफ़र कोई सीख दे इसको क़ुबूलो ।

हम धरा सुत अमर संतति, स्वप्नजीवी

गर्व के अब गीत गाओ ।। जीत के .....

आज भँवर में

आज भँवर में उलझी नैया

पार लगा दो अब खेवैया ।

सपनों के दिन बीत गए-से

अपनों के रंग रीत गए- से ,

इक-इक कर सब मीत गए-से

पतझर के दल जीत गए-से ।

एक मधुर सिहरण से पल - दो

जीवन को सरसा दो भैया ।। पार.....

राग नहीं, अनुराग नहीं है

सावन किन्तु, विहाग वही है ,

तिल-तिल जलता भाग वही है

पल-छिन की बस आग वही है ।

कमलगंध के लोक ले चलो

जीवन की हरो बलैया ।। पार...

किस-किस का मनुहार करूँ मैं

सपनों का संसार वरूँ मैं ?

खुद कितना विस्तार करूँ मैं ?

छलना का निस्तार करूँ मैं ।

मन लगता अब नहीं उटज में

ज्योतिलोक ले चल तो नैया ।। पार....

चेतना है विरहन-सी

शिशिर की है सिहरन - सी

चेतना है विरहन - सी

जलता अगन है

विचलित-सा मन है।

सूरज की मन्द हँसी

चुपके से मन में बसी,

मुँह चिढाए गेंदा यों

आँक सी है दिल में धँसी ।

प्रातियों में विरहा की

पीड़, सर्द तन है। जलता ....

साँसों ही साँसों में

बातों ही बातों में,

आँखों ही आखों में

इक उड़ान पाखों में ।

मुस्की, कनफुसकी कर

बहता पवन है ।। जलता .....

मंज़िल है, मंज़र है

स्वप्न का समन्दर है ,

टीस बहुत अन्दर है

चुभता कोई खंज़र है।

खुशी चुनूँ, दर्द बुनूँ ?

द्विधाग्रस्त मन है । जलता.....

घासों पे ओस बसी

कैसी निसर्ग हँसी ,

मसुआई दूभ खुशी

खिल आई मन्द हँसी ।

मेरा ये घर-आंगन

शोकिल चमन है। जलता.....

रुसवाई-सी हो गयी

पीड़ा मचलती है बाहर को आने को

आँसू छलके पलकों से ढुल जाने को

शब्दों को शब्द से लड़ाई-सी हो गयी

बातों-बातों रुसवाई-सी हो गयी ।

अनकही-सी सपनों की बातें उदास खड़ी

बिन कही-सी अपनों से रातें उदास पड़ी

सौरभ ने मन के कुछ तारों को छेड़ दिया

रजनीगंधा ने सौ सितारों को टेर दिया

कहने की बारी, हिचकाई-सी हो गई

बातों ही बातों ढिठाई-सी हो गई ।। बातों.....

जूही-चमेली ने अब बाजी मारी है

आज पवन नेह-नीति बेला पर हारी है ,

गंध लिए पूर्वैया नैया का पाल खोल

धीवर संगीत नव सुनाता है हृदय खोल

बहक गई मैं तो, लजाई- सी हो गई

बातों ही बातों हरजाई-सी हो गई ।। बातों.....

आवारा मन

आवारा है आवारा मन

बस सपनों का प्यारा है मन ,

लाख भुलाओ, इसे मनाओ

सपनों पर दिल हारा है मन ।

इसे न आता छलना-बलना

इसे न आता जलना-भुनना ,

इसे सुहाते सीधे-सच्चे

लोग-बाग का फलना-वलना ।

तिर्यकता से इसे दूर रख

यह स्वर्गिक इकतारा है मन ।। आवारा है..

यह शाश्वत है, यह भास्वर है

यह निश्छल यह अन्तस्स्वर है

यह बलिपंथी, अमर राग है,

यह शाद्वल ज्योतिरीश्वर है

अमर पंथ इसको जाने दो

स्वर्ण छोड़, तृण-हारा है मन ।। आवारा है..

अमित तृषा है इसके भीतर

टहल रहे हैं तीनों तीतर ,

पर एक धुन है, पर एक सुर है

जिसे पकड़ यह उड़े कबूतर ।

इसे न रोको, इसे न टोको

यह तिल-तिल दिलवारा है मन ।। आवारा है...

अपने धुन में चलता जाता

नूतन सपने बुनता जाता ,

अपनी राह मचलता जाता

गिरता और सम्हलता जाता ।

अपनी मस्ती, अपना रस्ता

अपनी गति, बंजारा है मन ।। आवारा है...

चल सजन क्षण खेल आयें

ये गुलाबी रंग बिखरे हैं क्षितिज की कोर पर

चल सजन क्षण खेल आयें हम गगन की छोर पर।

उड़ रहे चंचल विहग-युग पंख फैलाए अजित

और कुंकुम स्वर्ण-घट से उषा बिखराए मुदित,

लता-कुसुमों पर भ्रमर का बहकता-सा गुनगुनाना

कलि-कलि के कान में मधुमास का संदेश गाना।

बाँध ली ज्यों प्रकृति ने अपने चरण में पैंजनी

उठी विह्वल मुदित मादकता मेरी हर पोर पर । ये गुलाबी...

इन लरजते कुसुम-दल के परागों की ये महक

आम की फुनगी वे औ' पंछी दलों की ये चहक,

मदभरी पूरवा की बलखाती लजाती ये सिहक

क्यों न इस मधुमास में हर व्यक्ति जायेगा बहक।

झूमती सरसों, अलसियों की सलोनी फुनगियाँ

रेशमी तागे से जाती हैं मेरा मन जोड़ कर। ये गुलाबी.....

सब्ज साड़ी पहन ली है प्रकृति बाला मुदितमन

रंग-विरंगे फूल से उसने सजाया स्वयं तन

युग्म पल्लव यों लगे ज्यों कर रही प्रिय को प्रणति

मधुमास नर्तन के चरणक्षेपों में गति, पूरी है यति

मुग्ध अपना मन उठा है झूम, जाने किस लिए

चल सजन खो जायँ बासन्ती हवा झकझोर पर । ये.....

हे प्रभु

शीष झुकाए वन्दीजन शत द्वार-द्वार खड़े हैं

आज तेरे स्वागत में हे प्रभु! वन्दनवार सजे हैं।

आज विशोषित सकल जगत में प्रेम-पिपासित जन-जन

रुदन-हास, उन्माद- सदाशय रोज बदलता क्षण-क्षण

स्तब्ध, सशंकित, भीत, क्षुधातुर आज तुम्हारा जन-गण

तृषित भाव से हैं निहारते तेरा ही मुख कण-कण

तुम करुणा बरसा जाओ, आओ दशद्वार सजे हैं।। शीष---

तुम ही जीवन में मधुलय हो, तुम ही मधु जिज्ञासा

तेरे ही इंगित पर नाचे रोम-रोम की भाषा

मन पाकर संस्पर्श तेरा वारिद से सिक्त धरा-सा

धन्य बना दो जग-जीवन को देकर दरश जरा-सा

आग पराजित तेरे द्वार तन-मन थक-हार पड़े हैं। शीष---

तेरी ही आलोक-शिखा से प्रमुदित सजल कमल-दल

तेरी ही ऊर्जा से गतिमय प्रकृति, सबल सब चल-दल

प्रगतिशील संसार बने प्रभु! पा तेरा अन्तर्बल

तेरी ही करुणा विगलित सरिता, वर्षा, सागर जल

चन्दन-सी तेरी सुगंधि से अग-जग प्रेम सने हैं। शीष---

मुस्का देगा मधुर वसन्त

यों ही तारे बोओ मन में

उग आयेंगे गगन अनन्त ,

यों ही सपने बुन अन्तस् में

मुस्का देगा मधुर वसन्त ।

जीवन का संगीत पुराना

मधुर, मदिर है प्रीत निभाना,

किसने सिखा दिया बचपन से

मन-मंदिर का दीप जलाना ।

मंदिर-सी पावनता लेकर

चमक उठेगा नव सीमंत ।। यों ही---

जीवन नहीं अनल धारा है

जीवन नहीं गरल धारा है ,

जीवन हास-उँसासों का सच

जीवन, जीवन पर हारा है ।

मगर हारना कभी न सीखो

श्रीहत होंगें आशावन्त ।। यो ही.....

कई बार मिट्टी ने तोला

हार स्वर्ग चुप, कुछ न बोला ,

मिट्टी पर हो मुग्ध अप्सराओं ने -

प्रणय हेतु मुँह खोला ।

मृद्गंधी इस अग्निशिखा को

और बना दो दीप्त, ज्वलन्त ।। यों हीं .....

साँसों - साँसों में एक लय हो

बातों-बातों में बस जय हो ,

जीवन-जीवन में मानवता

जाति-जाति सुखमय, दुर्जय हो ।

कला-कला में सत्य-शील की

मादकता से भरे दिगन्त ।। यों ही....

छ्न्द जागे मगर

छन्द जागे मगर गीत बन ना सके

शब्द के अर्थ कितने हैं गिन ना सके ।

भाव के राज्य हमने बढ़ाए मगर

कल्पना-फूल कितने चढाए मगर ,

काव्य की देवियाँ तब भी रूठी रहीं

सारी उपमाएँ आतीं जो जूठी रहीं ;

काल के हाथ से मौत छिन ना सके ॥ छन्द--

जब तलक प्राण में जोश, गर्मी रही

हर जगह मेरी पूजा, सरगर्मी रही ,

छन्द के तार जीवन से टूटे जभी

थे जो अपने यकायक छूटे सभी ;

जोड़ टूटन को हम लेकिन ना सके ॥ छन्द --

कौन जाने किधर को हवा ये चले

किस तरह बाज से बच लवा ये चले ,

ज़िन्दगी दो घड़ी, दो घड़ी शाम है

जो है बाकी बचा बस वो एक नाम है ;

चेतना जब जगी आए दिन नाश के ।। छन्द--

चन्द लमहे मिले प्राण के गीत के

कितने अवसर मिले हार के जीत के ,

बोल पाए नहीं गीत के बोल को

पीट पाए नहीं जीत के ढ़ोल को ;

ज़िन्दगी का चुका हम ऋण ना सके ।। छन्द---

कोई ऐसा बता दो हमे रास्ता

एक दूजे की सुनने लगे दास्ताँ ,

मन्त्र प्राणों में जागे कि वो प्यार दो

मरते-दम साथ दे हमको वो यार दो ;

देश के हित जुटा एक तृण ना सके ॥ छन्द--

रात के शान्त पहरों में

रात के शान्त पहरों में ऐसा लगा

तेरे पैरों की आहट कहीं तो नहीं

फूल की पंखुड़ी पर सटे ओस में

ये तेरी मुस्कुराहट कहीं तो नहीं ।।

झील के नीले दर्पण में झाका जो था

यों लगा तेरी आखों में हूँ झाँकता ,

पूरवा से हिली फूल की पंखुड़ी

लाल तेरा अधर जैसे हो काँपता।

अलियों के स्वरों में तेरी पैंजनी -

की है खनखनाहट कहीं तो नहीं ।। रात के --

बन्द वातायनों से सिहकती हवा

यों लगा लेके तेरी खबर आ गई ,

राह भटकों पे जाने न कैसे तेरी

लूटती सैकड़ों को नज़र आ गई ।

कान में झिगुरों के पड़े शब्द जो

ये तेरी गुनगुनाहट कहीं तो नहीं ।। रात के - -

स्तब्ध थे रात के सारे वातावरण

गा के कोयल तेरे स्वर को दुहरा गई ,

पतझरों में गिरे जीण पर्णों में भी

एक झपकती हवा स्वर लहरा गई ।

तेरे पैरों तले टूटते पात की

यों लगा मरमराहट कहीं तो नहीं ।। रात के --

नील निस्सीम आकाश में मदभरी

कारे कजरारे बादर की उठती घटा ,

रेशमी केश-जूड़े को निज हाथ से

तूने बिखरा दिए, हों वही ये छटा ।

प्रेम के मन्त्र रग-रंग में उठने लगे

ये तेरी फुसफुसाहट कहीं तो नहीं।। रात के --

सात सुरों

सात सुरों में अंगड़ाई ली हैं

पीड़ा की उच्छलियाँ

तपते दिन में उतरे बादल-सी

गीतों की हैं कड़ियाँ ।।

क्षण-क्षण, पल-पल मदिर स्नेह की

प्यास जगी, आँसू बिखरे ,

मन की सूनी गलियों में

भटकी यादें, स्मृति के कोहरे ।

आज रहे बस आँसू पीते

कल ही मनायी रंग-रलियाँ ।। सात सुरों --

बीती रातें, बीते दिन-दिन

प्यार की धुन मधु सुन न सके ,

जीवन है बस प्रतिपल छलना

प्रीति न रीति, ये गुन न सके ।

मन के द्वारे रहे टाँकते

कुम्हलाई आशा की कलियाँ ।। सात सुरों--

रात आयी तो आशाओं के

दीप जलाए पलकों में ,

दिन निकले तो वन्दनवार

सजाए जीवन - फलकों में ।

पर विहान का पाखी भूला

साँझ तलक अपनी गलियाँ || सात सुरों--

जब भी टीसें, यादें फूटीं

सिहरे तन बहके - बहके ,

ऊँनीदी पलकों पर झर

जाते सपने महके - महके ।

हरसिंगार जैसे महकाए

रातों की अलसाई गलियाँ ।। सात सुरों--

दुख से रोने लगा आसमाँ

दुख से रोयी है धरती ,

एक न हरी घास उग पायी

प्रीति की भूमि रही परती ।

गीतों ने बस प्यास बुझाई

दिल बहलाती उसकी कड़ियाँ ।। सात सुरों--

भारत वर्ष हमारा

यह भारत वर्ष हमारा है

जीते-मरते हर साँसों से हमने इसे सँवारा है।।

छल-छल नदियाँ, कल-कल झरने

क्या खूब सारसों के उड़ने ,

पर्वत की हरित चोटियों पर

काले बादल आते लड़ने ,

झीलों ने अपने दर्पण में भारत का अक्स उतारा है।। यह---

चरणों पर झुका हुआ सागर

माथे पे हिमाला-शिखर प्रखर ,

है बना मेखला विन्ध्य अटल

और गंग-जमुन माला सुखकर ,

सह्याद्रि-मलयगिरि की खुश्बू एका का प्रबल सहारा है ॥ यह---

यह चरण-चरण दृढ़ चरण बढ़ा

सभ्यता-शिखर-उत्कर्ष चढ़ा

यह अंधकार में बनालोक

पीछे इसके 'तीसरा लोक' ;

निशस्त्र विश्व हो एक ध्येय, इसे अमन विश्व का प्यारा है।॥ यह-

यह सत्य-अहिंसा का वाहक

सद्गुणियों का है यह गाहक,

रंगीन वेश, यह धीर देश

है लोकतन्त्र का आवाहक ;

मानवता के स्वर्णिम विहानहित स्वर्ग धरा पे उतारा है।। यह---

हाथों में तिरंगा सिर पे कफ़न

जिसके न रुके हैं कभी कदम ,

चलना सीखा अंगारों पर

लहराया ज्ञान का यह परचम ;

'सत्यमेव जयते' जिसके पथ का दीपक नव न्यारा है।। यह--

अवसर के दिन

अवसर के दिन आ न सके

वो क्या निकलेंगे आगे ,

जीवन की गाड़ी चलती है

सब दिन भागे-भागे ॥

रोना, रुकना, खोना, झुकना

सब बेकार की बातें ,

चाहो गर तो कट सकती है

सुख से सारी रातें ।

खुद में अगर जब आग छिपी तो

दुनिया से क्यों माँगें ।। अवसर - -

नहीं तुम्हारे हिस्से में दुःख

बाँट सको तो बाटों कुछ सुख ,

ना जाने किस ओर समय की

धारा का मुड़ जायेगा रुख ।

खुद को उसमें बह जाने दे

या तू हो जा आगे ।। अवसर--

ये दो हाथ तुम्हारे अपने

सजा सकेंगे सारे सपने

तेरे ठोस इरादों से सुख

जीवन में लग जाय बरसने ।

तुम खुद भाग्य विधाता हो

क्यों खुद को कहो अभागे ।। अवसर --

तू चाहो तो

तू जब चाहो जीवन में मदमस्त घटाएँ छा जाए

तू चाहो मन-उपवन में रंगीन फिजाएँ लहराए

तू चाहो यदि साँसों में खुश्बू गुलाब की भर जाए

तू चाहो तो सपन मोतियों-सा आँखों में छितराए ।

इठलाना मत चाँद रात का, दिखलाना मत चतुराई

थाह ज़रा लेकर देखो दिन के उजास की गहराई,

किसमें, किस क्षण कितनी ज्वाला, अन्दर कितनी अंगड़ाई

बुनते सपने जीवन के यों तोड़ न जालिम ! हरजाई;

तू चाहो तो किरण दूधिया से जग को नहला जाए ॥ तू--

मन भरमाया हुआ अगर अंगार बनाने की ख़ातिर

मन तरसा है अगर तेरे श्रृंगार सजाने की ख़ातिर ,

मन शर्माया यदि किसी से प्यार जताने की ख़ातिर

मन अकुलाया होठों पर मुस्कान खिलाने की ख़ातिर;

तू चाहो यदि तेरी हँसी जीवन भर को मुस्का जाए ।। तू--

सारस दूर गगन में उड़ते, देखा इन्द्रधनुष से जुड़ते

भौरों का गुंजार सुना है, फूल-फूल तितली को उड़ते

खूब मेघ का स्फालन देखा, बादर को फिर सिमट-सिकुड़ते

चकवा-चकई के जोड़े देखे और दुखी हो उन्हें बिछुड़ते

तू चाहो तो प्रणय हमारा जीवन-वन महका जाए।। तू--

मन में प्रीत

मन में प्रीत बसा लूंगा

तुझे मनमीत बना लूंगा

तेरी यादों के खुश्बू को जीवन में महका लूंगा ।।

भींगा-भींगा चाँद उगा है

भींगीं- भींगी रातें ,

खोया-खोया-सा दिल मेरा

भूली-भूली बातें ;

इस मौसम को, इस वारिश को तेरे नाम चढ़ा दूंगा ।।

क्यों हैं डग ये रुके-रुके से

झुकी-झुकी-सी क्यों नज़रें ,

सहमे - सहमे - से स्वर हैं क्यों

हिरणी-हिरणी-सी क्यों नजरें ,

बेहोश शाम, सादे मौसम में कैसे दिल बहलाऊंगा।।

वे किस्मत वाले होते हैं

जिनको प्यार मिला है ,

वे सुख के सागर के मालिक

जिनको यार मिला है ;

बन्दनवार सजाउंगा तब जब तुमको पा लूंगा ।।

इस **महान देश की वन्दना करो**

वन्दना करो, मिलके प्रार्थना करो

इस महान देश की अर्चना करो ।।

साधकों का देश यह, उपासकों का क्षेत्र

वीर भोग्या यह धरा, खुले यहीं त्रिनेत्र ।

राम की ललाम भूमि, कृष्ण का ब्रज क्षेत्र

विश्व के खुले तो खुले रह गए हैं नेत्र ।

बुद्ध, गाँधी भूमि की अभ्यर्चना करो ॥ न्दना करो...

आर्य ने, कुषाण ने, हूण ने, पठान ने

शक, मुगल, ब्रितानियों के लोग धीरवान ने ।

पुर्तगालियों ने, पारसी, सकल जहान ने

सभ्यता के शीर्ष पर टिके मुलुक महान ने ।

जहाँ झुकाया शीष उसकी अर्चना करो ।। वन्दना करो...

यह धरा है शान्ति की, विज्ञान की भी है

प्रेम, अहिंसा तो अस्थिदान की भी है।

शिवा, महाराणा-से महान की भी है

बोस, भगत, तिलक सबके शान की भी है।

भारत धरा विशेष की समर्चना करो ।। वन्दना करो...

यह सदा अनेकता में एकता पिरो रही

भेद, धर्म मुक्त संविधान ही सँजो रही ।

नित नए विकास की सुबह यहाँ पे हो रही

सब का साथ एक विकास नीति सबकी जो रही।

विकासमान भूमि की अन्वर्चना करो ।। वन्दना करो...

चाँद भी आँखमिचौली लगा खेलने

चाँद भी आँखमिचौनी लगा खेलने

प्यार की बाँसुरी बेसुरी हो गई,

बात कल तक रही है मधुर ही मधुर

आज जाने न क्यों वो बुरी हो गई ।।

खूब थे इस गगन में सितारे कभी

कितनी नावें लगीं इस किनारे कभी ,

फूल इस बाग में कितने-कितने खिले

इस गले से गले कितने-कितने मिले ।

आज आए वो दिन जब झरे पात हैं

आँख सब की मुझही पर कड़ी हो गई ।। चाँद ---

राग तो राग ये कैसा वैराग है

हो कुसुम एक नहीं कैसा ये बाग है ,

छूट जाए अगर प्राण भी तो भला

छोड़ दे साथ तो मानो भागी बला ।

इस अनोखे जमाने में मैं अजनबी

बस यही भूल मानो बड़ी हो गई ।। चाँद ---

छद्मवेशी बना मैं कभी जो नहीं

छल पाया किसी को कभी जो नहीं ,

इसलिए आज मुझको ये ईनाम है

लग रही हर जगह शाम ही शाम है ।

नेकियों में स्वयं ही की हम मर मिटे

पूरे इनसान की तस्करी हो गई ।। चाँद ---

कह रही थी जो कल तक तेरे साथ हैं

तेरे दुःख बाँटने को मेरे हाथ हैं ,

शाम हो या सबेरा ये जीवन तेरा

संग रहूंगी सतत साथी बन तेरा ।

फूल कुम्भलाए जब साथ भी छोड़ दी

दीखती भी नहीं, वो परी हो गई ।। चाँद ---

बस यहाँ एक छलना है हर बात में

अनगिनत हैं सितारे मगर रात में ,

तब तलक फूल पर अलि का प्यार है

रंग-खुश्बू उपस्थित है, रस-सार है ।

मौसमी मेघ-मेढक की ये टर-टपर

आदमी की हक़ीक़त बड़ी हो गई ।। चाँद - -

सूर्य को ढ़ँकता हुआ

सूर्य को ढँकता हुआ है बादलों का यह गमन

झील के किसी सर्द सीने में जलाई है अगन ।।

कोई मेरे दिल से भी कुछ बात पूछे तो कहूँ

किस तरह बेचैन भन भी हो रहा फिर क्यों मगन ।। सूर्य...

हैं प्रफुल्लित ये दिशाएँ, ये नदी, ये कुसुम दल

इस सुहानी घन-घटा से है प्रफुल्लित मेरा मन ।। सूर्य--

अर्थ जागे, आज मन के मन्त्र के स्वर गूँजते

पूर्ण झंकृत कर दिया है छूके मेरा अतल मन ।। सूर्य...

आज कुछ परछाइयाँ चलने लगी हैं संग-संग

दीपमाला की तरह सजने लगा प्यारा भवन ।। सूर्य--

आज भी कोई बात मेरी ज़िन्दगी ने मान ली

मन दिया है तो न क्यों दूँ आज अपना प्यारा तन।। सूर्य...

दूर्वा पर

दूर्वा पर ओसों के मोतियों का राज है

सच विचित्र शीतऋतु का ये समाज है ,

रोंगटे खड़े थर-थर लौकी की बतिया

रात भर खिखिर की बेकल आवाज है ।।

बथुआ मरैली कँपाती है थर-थर

गाँती में ठिठुर रहे वस्ती के बच्चे ,

घूरे पर बैठे पर ठिठुर रही आँत है

शीत की दुलत्ती से काँपे अच्छे-अच्छे ।

हड्डी में धँसती है, सुई-सी चुभोती है

खेतों से लाना किसानों को नाज है ।। दूर्वा पर--

हरजाई पछिया तो पीछे पड़ जाती है

चुपके से शाम ढले घर में घुस आती है ,

वर्जना न माने है, जिद्दी, मरजाई है

बच्चों और बूढों के संग सो जाती है ।

ओढ़े चिटाई को दुबके सब एक साथ

खो गया भेद तो, तिरोहित-सी लाज है।। दूर्वा पर--

राहें जब भी मिले

राहें जब भी मिले तो चलो प्यार से

बाँहें जब भी मिले थाम लो प्यार से

चार दिन जिन्दगी, चार पल की खुशी

गम न कर, हर खुशी वार दो प्यार से ।।

ये कुहासे की परतें फटेंगी कभी

ये निराशा तनिक हैं हटेंगी कभी ,

ये उँसासें तो आई हैं, छँट जायेंगी

है हताशा, एक दिन घटेंगी कभी ।

चान्दनी के लिए सोचना व्यर्थ है

एक आवाज दो चाँद को प्यार से ।। राहें--

ज़िन्दगी भी अजब करवटें ले रहीं

हर खुशी रात-दिन सलवटें ले रहीं ,

सब की खातिर लड़ो यह तेरा धर्म है

नीति युगधर्म की आहटें दे रहीं ।

जो मिले राह में प्यार से ले चलो

एक आवाज दो सब को इस पार से ।। राहें --

कितनी राहें मचलती हैं इन्तजार में

कितनी बाहें मचलती हैं बस प्यार में ,

कितने सपने छलकते हैं संसार में

कितनी आँखे छलकती हैं बस लाड़ में ।

उनका सम्मान कर, सब का संधान कर

प्यार उनपे लुटा दो, ज़रा प्यार में ।। राहें--

छू लो आकाश को

स्वप्न जीवी बनो, छूलो आकाश को

मत जमीं को भुलाना, स्वजन, पास को ।

कर भुजाओं पे विश्वास, खुद पर यकीं

हौसलों से जिओ, बन के रह खुद मकीं ,

ज़िन्दगी हो भरा तेज से हर घड़ी

तैर जाओ समन्दर हो बाधा खड़ी ।

जो दहकते हैं अंगार-से क्यों डरे

खुद उठो, राह चल, मत मसल घास को।। स्वप्न - -

कितने अन्याय के पथ, उसे ठीक कर

न्याय-रथ के लिए ठीक फिर लीक कर ,

जीने के हित धरित्री को सुन्दर करो

पीने के हित तो मीठा समुन्दर करो ।

ये भी जीना क्या जीना है निज स्वार्थ में

खुद बढ़ो, ऊँचे चढ़, छोड़ मत साँस को।। स्वप्न - -

तूने खींची प्रत्यंचा है संधान को

तूने सींची व्यवस्था है सम्मान को ,

तूने दी हैं बो राहें सभी चल सके

तूने खींची हैं बाहें न छल, छल सके ।

व्यर्थ करना न जीवन के सारे तपस्

लो पकड़, खींच लो शोषितोदास को ।। स्वप्न ---

दिए की लौ जला लो

यह अंधेरा घना है तो तुम दिए की लौ जला लो

चाँन्दनी थक जाय तो फिर पास अपने रवि बुला लो।

रहजने हैं अंधेरे ये, साथ तेरे किरण तो हैं

अमृत पथ में कई रोड़े, पास दृढ़ ये चरण तो हैं

मत प्रकम्पित हो हवा से, मन-मणि को फिर खिला लो ।। इक--

ये तरंगें बादलों की सतत रचती हैं छलावे

सजल पथ पर भी हमेशा मन में जो विश्वास लावे

मत सिहरना, भय तुम्हारे मन-विजन हैं, सत जिला लो || इक--

सृजन ही पथ है मनुज का, यह कभी मत भूलना तुम

स्लथ शरीरों से न यौवन राग में फिर फूलना तुम

हत निराशा, भरो साहस, वरो नवता, स्वर मिला लो || इक--

कर्म-पथ एक है, मनुज का वरण करना ही है साहस

अग्निपथ को तैर करना पार अविचल है विहँस-हँस

अडिग रखो चरण तव, इस प्रगति को नव सिलसिला दो।। इक-

किसने तुम पर

किसने तुम पर हृदय लुटाया, किसने तुम्हें किया है प्यार

किसने तुम्हें दुलारा होगा, किसने जीवन दिया है वार ।।

किसने मांग भरी है तेरी

किसने सुखद श्रृंगार किया ,

किसने सपने पूर्ण किए हैं

किसने रंगीं संसार किया ।

किसने चांद सलोना देकर

सच्चा-सच्चा किया दुलार ।। किसने --

मन की प्रीत लगाने वाला

कौन तेरा है प्रीतम प्यारा ,

सपने तारों से भर-भर कर

किसने नदिया पार उतारा ।

किसने छल-छल स्नेह उढ़ेला

किसने सुखद किया संसार ।। किसने --

तू बादल की प्रिया दामिनी

तू निसर्ग की मधुर रागिनी ,

तू अनुपम है, तू स्वर्गिक है

तू अमोल, प्रिय-प्रेम-भागिनी ।

तूने अपने सुमधु स्वप्नों की

परिभाषा रच दी साकार || किसने --

कैसा युग कैसी छवि

कैसा युग, कैसी छवि, कैसा है आचरण

करता नहीं कोई लोभों का संवरण ।।

बातों में उसकी अमृत की मिठास है

भीतर से गरल-धार बहती-सी खास है,

खाता है शपथ शत, मृषा सब प्रयास है

सौ-सौ छलावों से भरा हुआ हास है ;

कैसे विश्वासों का कर जाऊँ संतरण ।। करता---

शब्दहीन चापों से सिंह ज्यों हिरण-दल पर

भालू के पंजे ज्यों माछों के चल-दल पर ,

बाज का झपट्टा परेवों के हलचल पर

भेड़ियों के नयन पड़े भेड़ों पे पल-पल पर ;

घात-प्रतिघात का कब होगा वाष्पीकरण ।। करता---

कितना विचित्र-सा जीवन का खेल है

शहरों कस्बों में लोगों का रेल-पेल है ,

गायब मुस्कानें, हज़ारों झमेल है

असंतुष्ट, आत्ममुग्ध जोड़ी बेमेल है ;

चलो कहीं दूर मृदुल जीवन करें वरण ।। करता---

भौतिकता नाच रही सबके कपाल पर

असन्तोष टीका बन बैठा है भाल पर

मकड़ी तो फँस गई स्वयं बुने जाल पर

बन्धु! कहाँ अमृतफल फलते हैं शाल पर

तृष्णा की धार बही प्रेम, करुणा, लगन ।। करता---

मत पूछो कवि से ये कैसा परिवर्तन है

हिंसा का स्वागत, सम्बन्धों का तर्पण है ,

जीने की चाह मौत बाँटने को अर्पण है

समझौता जीवन है, जीवन प्रत्यर्पण है

कौन गिने आँसूँ, गिरने के असंख्य चलन ।। करता--

ज्योति से ज्योति

ज्योति से ज्योति जलाया करो न !

जग-जीवन हर्षाया करो न !

निविड़ अंध से जीवन विचलित

आसों का आधार लिए है ,

करुणा भरी निगाहें टुक-टुक

ताक रहीं थक-हार लिए है ,

शमित शलभ-सी मनोकामना

बुझा-बुझा-सा प्यार लिए है ,

भुतबंगले-सा मन अभिशापित

सदियों का संहार लिए है ,

जीवन तृषित मरुस्थल है, तुम

स्नेह-सुधा बरसाया करो न !! जग-जीवन -- -

एक तरफ है जगमग जीवन

दूजी तरफ़ हताशा है ,

एक तरफ सच होते सपने

दूजी तरफ़ निराशा है ,

द्विधाविभक्त मनुज जीवन का

सच कितना भरमा-सा है ,

बया सदृश रच नीड़ बुन रहा

उधर प्रलय उतरा-सा है ,

सावन के घनघोर तिमिर में

बिजुरी रेख जलाया करो न !! जग-जीवन - -

समय बहुत निर्मम धारा है

बहा लिया करती मुस्कानें ,

कहीं जगाती तप्त तरलता

कहीं अमृतमय जगे तराने ,

अजब-अनोखा समर हृदय का

दुर्लभ पर लगता ललचाने ,

बालारूण पर मुग्ध बालकपि

फिर उड़ चला अलभ को पाने

तुम सब संशय तोड़, समय का

मुक्ति-मार्ग दिखलाया करो न !! जगजीवन---

हरसिंगार ने फिर वर्षाए

फूल अर्घ्य के प्रमुदित मन से ,

फिर कनेर ने धरती का तन

पीत किया है पीतवरण से ,

फिर गेंदा की सुमन क्यारियाँ

बासन्ती बन उठीं लगन से ,

फिर सरसों के खेतों में वन-

देवी दहक उठी तन-मन से ,

तुम स्वागत में नव बसन्त के

पूर्वैया सरसाया करो न !! जग-जीवन---

चलो तो लेकर नव संकल्प

चलो तो लेकर नव संकल्प ।

बाधाएँ सब मिट जायेंगी

कुसुमित होगा जीवन-कल्प ।।

राग-विराग, अपर-निज छोड़ो

अँधियारी की कारा तोड़ो ,

ऊँच-नीच की उलझन से बच

मानवता से नाता जोड़ो ।

छल-छल नदियाँ, कुल-कुल चिड़ियाँ

हरितभूमि से मत लो अल्प ।। चलो तो --

सुधा-सुवर्षा, शीत - समीरण

पुष्प-पराग सने पथ-रजकण ,

जीवन भी कविता बन जाए

जीवन-लय अवरोहारोहण ।

कर्म घने हों, छन्द सने हों

बन्ध-मुक्त जीवन कर कल्प ।। चलो तो --

कुछ तो हो, विचार का स्फालन

कहो तो यों हो सिर संचालन ,

अप्प दीप हो, सप्त द्वीप हो

विश्वग्राम का बन युगचारण ।

शुभ शासन हो, आश्वासन हो

निर्वासन से मुक्त विकल्प ॥ चलो तो---

कितनी बार कहोगे यों ही

कितनी बार छलोगे यों ही ,

कितनी बार सितासित जीवन

कितनी बार दलोगे यों ही ।

मृगतृष्णा है, सच कितना है

अबके नहीं सुनाना गल्प ॥ चलो तो ---

सत्य-अहिंसा यहाँ गर्व हो

अहंकार का सदा खर्व हो ,

सृष्टि, मनुज के हित बढ़ते हम

उत्साही प्रत्येक पर्व हो ।

करुणामय हो, शील-विनय हो

अनुशासन का बने प्रकल्प ।। चलो तो---

इन शलभों-से कहो

इन शलभों से कहो मरे क्यों

जीवन तो अनमोल रतन है

आवारा बादल को बोलो

कहीं बरसना सिर्फ़ पतन है।

हवा गुजरती फूल-फूल से

ले सुगंध कुसुमित दुकूल से ,

जन का आंगन, मग भर देती

सदय, क्रूर के, ज्ञात-भूल से ।

सबको तृप्ति हमेशा देती

यही सुगंध का सदा जतन है। जीवन तो....

करुणा का क्यों बने पात्र हम

दीप्त सूर्य के रहे छात्र हम ,

सतत कर्म-पथ बढ़ने वाले

शिवि, दधीचि और कर्ण मात्र हम ।

गौरव-पथ को कर आलोकित

चलने का मग एक वतन है । जीवन तो .....

कोमलता पहचान हमारी

अमृत बोल और तान हमारी ,

स्नेह भरा जीवन भाता है

सद् प्रिय पर बलि जान हमारी ।

नरता का सम्मान हो पहले

मूल्य-बोध फिर ये तन-मन है। जीवन तो.....

जनता है अधिकार की भूखी

जनता है अधिकार की भूखी

उसका हक तो मिल जाने दो ,

साँझ-सवेरे जीवन-उपवन

फूलों से तो खिल जाने दो ।

नहीं यहाँ है कोई दुराशा

शब्द-शब्द में भरी है आशा ,

पग-पग में विश्वास भरा है

जन-जन में है दृढ़ अभिलाषा ।

इन पर करो न करुणा, हक दो,

सुर से सुर नव मिल जाने दो । उसका हक.....

हर्ष-विषाद-भरा है जीवन

भाव - कुभाव भरा है प्रतिक्षण ,

करो कल्पना सुख-भर-जन-जन

आत्मोन्नति सबका, जय-जीवन ।

शाश्वत मानवता छिन-छिन हो

मन का कमल तो खिल जाने दो। उसका हक.....

यश अक्षर हो, एक स्वर हों

प्रतिपल मानवता भास्वर हो ,

एक-एक प्रति राग घने हों

एक ही सब का जीवन-स्तर हो ।

निर्भरता न बने कातरता

गति-लय-ताल को मिल जाने दो । उसका हक....

इनको सारा मान फिरा दो

घर-घर का सम्मान फिरा दो ,

पारस्परिक समुद निर्णय का

प्रतिजन का अभिमान फिरा दो ।

शिक्षा, स्वास्थ्य, समुद जीने का

राग-विराग अखिल पाने दो। उसका हक.....

एक सजीली शाम है

एक सजीली शाम है उसपर नशीली चान्दनी

मुस्कुराना यह तेरा शरमा गयी-सी चान्दनी ।

मन की सब सम्भावनाएँ जाग जाती रात को

केसर-धुले आकाश-सा स्वच्छ मन है प्रात को ,

वह तुम्हारे चरण-रंजन बढ़ चले अज्ञात को

मैं चरण की लालिमा से मन सजालू चान्दनी ।। एक---

मैं विमोहित हो रहा तेरी पैंजनी के बोल पर

मैं स्पन्दित हो रहा तेरी नागिनी के डोल पर ,

है समर्पित यह हृदय चंचल नयन गोल-गोल पर

मैं पिघलना चाहता तेरे लहू में चान्दनी ॥ एक....

किसने देखी स्लथ सुबह कल की नशीली संग हो

किसने देखा है विहग का चहकना संग-संग हो ,

किसने देखा भोर के खेतों में सौ-सौ रंग हो

काश! अपने स्वप्न का साकार बनता चांदनी ।। एक----

शरद में जलकर

शरद में जलकर राख हो गयी

सावन की हरियाली

हरे-भरे थे खेत निराले

अब हैं खाली-खाली ।।

यहीं फुदकती थीं गिलहरियाँ

यहीं नाचते थे वनमोर ,

यहीं पे बूंदों की टप-टप थी

यहीं पे रिमझिम के थे शोर ।

कैसा यह झंझाझकोर है

मुरझाई डाली - डाली || हरे भरे थे-

धान के शीशों की थिरकन में

धनलक्ष्मी की पैजनियाँ ,

लकदक वृक्ष, घने मग - जंगल

हर्ष, उछाह-भरी गलियाँ ।

किसकी नज़र लगी है यारो!

मकई की बाली खाली ।। हरे भरे थे --

यह रजनी भी नहा रही थी

शरद हास में रच-बस कर ,

सुघड़ चान्दनी पसर रही थी

खेतों - खलिहानों में हँस कर

वह पावन-सा गाँव जहाँ सब

क्यों उदास माली - माली ।। हरे-भरे थे --

उत्कर्षों की होड़ में आकर

हमने अपना मन खोया ,

बुनियादी सुविधा न जुटाए

स्नेहशील जन-जन रोया ।

शरद-हास में यह हुतास का

कैसा ताण्डव विप्लवशाली ।। हरे-भरे थे...

अपना प्यार रहेगा

धरती से आकाश तलक इक जैसा संसार रहेगा

तेरे-मेरे बीच बचा जीवन भर अपना प्यार रहेगा।

लमहों की ख़ता भुलाने वाले

सदियों को सजा सुनाने वाले,

हम वैसे इनसान नहीं हैं

क्षण को युगसत्य बताने वाले ।

रिश्तों को अनमोल समझ फिर

जीने का आधार रहेगा । धरती से...

कण-कण चुनकर सृजने वालों

पल-पल थक कर चलने वालों ,

हार न मान मचलने वालो

टकसालों में ढ़लने वालों ।

अपनी-अपनी जगह अडिग रह

टिका हसीं संसार रहेगा। धरती से...

मत छेड़ो इन वनफूलों को

संस्कृतियों के जड़-मूलों को ,

रासेश्वर की पग-धूलों को

अगिनखोर के हृद्-शूलों को।

श्रद्धानत हो जाओ खड़े तो

वरदायी अधिकार रहेगा। धरती से...

हम अभिनत नमन शत-शत हैं

सकल लोक के प्रति नत-नत हैं ,

अनुरागी हम अभिनन्दन के

चरण-धूलि हम हैं, अनुगत हैं ।

हरा-भरा कर दो मृदुता से

स्पर्श-पुलक - व्यापार रहेगा। धरती से ----

प्रेम पुलक है, प्रेम सलभ है

प्रेम जलद है, प्रेम अलभ है ,

प्रेम धरा है, प्रेम ही नभ है

प्रेम न जाने क्या-क्या सब है ।

डोर न छोड़, निराश न हो

सपना होकर साकार रहेगा। धरती से.....

गाँव का अपना हो न सका

गाँव का सपना, गाँव में अपना,

गाँव भी अपना हो न सका

गाँव का रोना, गाँव का धोना

गाँव के भाग से खो न सका ।।

खेतों में अँखुए का उगना

डालों पर कोंपल का जगना ,

गिलहरियों की उदकन-फुदकन

खेतों में चिड़ियों का चुगना ।

दादा-दादी के क़िस्सों का

सच्चा हिस्सा हो न सका ।। गाँव - - -

चूल्हे पर डेकची की खदकन

अटकन - मटकन-दहिया-चटकन ,

सच का सच, झूठों पर अटकन

भूख में रोटी-नून की भटकन ।

मैं हिस्सा इनका था, लेकिन

मैं क्यों इनका फिर हो न सका ।। गाँव - -

बेटे की आती नहीं है पतिया

बोझ बन गई सर पर बिटिया ,

फसल लहक गई फाटे छतिया

सिर धुनता वो बैठ के खटिया ।

बड़ी कसक है, मिटी ठसक है

फाग भी हृदय भिंगो न सका ।। गाँव --

गाँव वही पर बात न वो है

लोग वही पर साथ न वो है ,

रात वही पर प्रात न वो है

डगर न वो और ज्ञात न वो है ।

अनचीन्हे हर रस्ते हो गए

सोच-सोच पल सो न सका ।। गाँव --

आमों के डालों पर --

आमों के डालों पर फुदके चिड़ैया

मंजर की गंध-छन्द लायी पूर्वैया

साँसों में शत-शत कदम्ब खिल आए हैं

आया बसन्त खेत, सरसों, तलैया ।।

मदिरासव चूता है कोयल की तान में

लहराते सरसों के खेत हरेक थान में ,

उत्सुकता डालों पर कोंपल - उत्थान में

हरियाली सपनों-सी पसरी जहान में ।

प्रकृति सुहागिन ये हर पल इतराती है

सुषमा से प्रमुदित निसर्ग ताता-थैया ।। आमों--

महुआ की मादक सुगंध-मन्द छायी है

पूर्वा की लहरें फसलों से चल आयी हैं ,

अपनों के सपनों से पुलक अंग छायी है

गेहूँ, मकई, अलसी पग-पग इतरायी है ।

मुस्काए अड़हुल, कमल-सर महक उट्ठे

अमलतास आस मन की झालर भुलैया ।। आमों--

सर-सर ध्वनि वात बोले, मकई के पात डोले

गेहूँ के शीश झूमे, तीसी भी साथ डोले ,

खामोश दोपहरी महुआ सुगंध भरी

बाग में गुलाब-गंध खग-शिशु-सा पंख तोले

पात-पात नवपल्लव, मंजर खिल आए हैं

डाल-डाल गिलहरियाँ ताकती हैं छैंया ।। आमों--

झूठ का परचम

रोती महंगाई को दुनिया, शैतानी के खेल में

झूठ का परचम फहराता है, सच सड़ती है जेल में ।

नंगी वतनपरस्ती हो गई, दुखिया हुआ किसान है

ईमानों की बलि चढ़ी है, नीलामी पर सम्मान है,

सपने टूट रहे शीशे-से, दो कौड़ी का आन है

केवल है विश्वास में छलना, टूट रहा अभिमान है।

भीड़तन्त्र सर्वत्र है हावी जनता रेलम-पेल में॥ झूठ का परचम...

जन्नत पर है जाल-साज की दृष्टि घिनौनी वर्षों से

उबरी है भोली-सी जनता कठिन उपाय, संघर्षों से,

पूजा जाता देश वही बढ़ता-पथ पर उत्कर्षों से

पूजी जाती वही सभ्यता बनती संस्कृति-स्पर्शों से।

बारूदी गंधों ने इसको डाला विविध झमेल में॥ झूठ का परचम --

आज परेशाँ जनता रहती रोटी हित तकरारों में

नहीं फूल है जीवन महमह, बुरा हाल खुद्दारों में,

अग्नि-पथ है जीवन-पथ, जीवन चलता ज्यों ख़ारों में

एक निराशा व्याप रही है कर्माकुल व्यापारों में।

साँझ सलोनी, रात चाँदनी खोयी जीवन खेल में ॥ झूठ का परचम

आया बसन्त

गाओ मधुकंठिनी कोयलिया

ऋतुराज बसन्त तेरा प्रियतम

आया, तेरी लाया पीली चुनरिया।। गाओ --

प्रकृति सुन्दरी थिरक उठी है

मत्त अप्सरा-सी सज-धज कर ।

सभी दिशाएँ मुखरित हो गईं,

शोभित है किंजल्क लरज कर ।

प्रकृति नटी प्रिय के स्वागत में

बिखराई फूलों की डलियाँ ।। गाओ -

थिरक-थिरक कर संसृति सुन्दरी

सुषमांचल महका लहराई ,

लाल-लाल पल्लव-कर-संपुट

कर प्रणाम प्रिय को मुस्काई।

गूंज उठी गुन-गुन अलि-आवली

खनकाई हो प्रकृति पायलिया ।। गाओ --

आम्र मंजरी 'स्तवक' सजा है

बेला बनी इत्र का फाहा,

प्रिय बसन्त के गज़रों में गुंथ

फूलों ने सौभाग्य सराहा।

अलसी नीली, सरसों पीली

करती-सी मनुहार मोहिनिया।। गाओ--

वन उपवन और डाल-डाल पर

कोमल कुसुम-सिंहासन सोहे,

स्वर्ग परी-सी कुसुम- कुसुम पर

उड़ती तितली भी मन मोहे।

प्रिय बसन की इस महफिल में

तू भी मधुर सुना दे रागिनियाँ ।। गाओ---

आवारा नागों ने

आवारा नागों ने दहशत फैलाया

घर-घर की हरियाली को फिर मुरझाया

साँसों में जहरीलापन अब व्याप रहा

हर सीमाएँ टूट रहीं, जग भरमाया।। आवारा--

लोग शराफत में भी संशय ढूँढ रहे

विजित लोग भी रच कुचक्र, जय ढूँढ रहे।

तारों में अब के कुचक्र का है संशय

बूँदाबाँदी में भी दुनिया-लय ढूँढ रहे ।

है ख़तरनाक संशय का यह बीजारोपण

है ख़तरनाक मानव पर प्रश्नाकुल छाया ।। आवारा--

है बद्ध हमारी सीमाएँ संकल्पों से,

हैं बद्ध हमीं बहुसंख्य याकि कुछ अल्पों से ,

हैं बद्ध हमारी नीति, शराफ़त, शुभता से

है बद्ध हमारी सोच, खुली न विकल्पों से ।

क्यों राष्ट्र किसी के दिए इशारे पर नाचे

यह बहुविवाद का समय नहीं है मनभाया ।। आवारा-

यह बुद्ध और गाँधी का देश अहिंसक है

करुणा इसमें इतनी कि विश्व प्रसंशक है,

यह मर्यादा का पाठ पढ़ाने वाला है

शाद्वल है यह धरती का, नहीं प्रवंचक है।

तू इतना ज़हर उड़ेल रहा, कैसी अरिता ?

अमृत ही देगा, फिर भी यह छल कब आया ।। आवारा--

ओ छिपे नाग ! छेड़ो न हमें, फन मसलेंगे

तीखे प्रश्नों के तीर वक्ष पर हँस लेंगे,

हम पकड़ फनों को ज़हर निचोरेंगे एक दिन

तुम रखना याद किसी दिन, भुज में कस लेंगे ।

तेरी दुनिया में हम खुशियाँ लाने वाले

लाएंगे एक दिन प्रलय-वह्नि-अर्जित माया ।। आवारा --

श्रृंगार या कि नागिनी हो

तुम अनल हो याकि कोई स्वर्गवाली रागिनी हो

स्वप्न से भर दे जो जीवन तुम वही बड़ भामिनी हो ।

आगमन से यह विजन सारा सरल हँसने लगा है

दिव्यता-आलोक जीवन में उतर लसने लगा है,

रूप के भी आवरण में क्रूर मन बसने लगा क्यों

नागफणि के फूल का फन व्यक्ति को डँसने लगा क्यों,

तुम बताओ कौन हो श्रृगार या कि नागिनी हो ।। तुम..

मत छलो इस भाँति सारा मर्म ही जलने लगा है

नर्म-सा खरगोश अग्निधार पर चलने लगा है ,

क्यों पड़ा है बाज नन्हें-से गोरैया के भँवर में

क्यों तड़पता सिंहशावक लकड़बघ्घों के समर में।

क्यों छुपी छद्मावरण में, क्या हृदय की घातिनी हो।। तुम...

रूप देखा, रंग देखा, अजनवी-सा संग देखा

नेह देखे, गेह देखे, भुजा का आसंग देखा,

प्यार की बातें थीं, लेकिन प्रीति वाला दम नहीं था

स्वप्न था, उसमें रवानी का कोई लक्षण नहीं था ।

स्पर्श है, मृदुता नहीं, अनुराग - हत अनुरागिनी हो ।। तुम...

क्यों बना विषधर सरल मन, क्यों छला जाता सरल

क्यों हवा में विष घुले, सुषमा सुभग में है गरल

क्यों अधर पर सप्तस्वर की जगह घाती बोल है

क्यों तुम्हारे स्पर्श में है शून्यता, हत मोल है

मर्मभेदी मर्म है, तू साँझ स्लथ, उन्मादिनी हो ।। तुम...

बूढ़ी माँ की

बूढ़ी माँ की पथराई-सी आँख,

न बेटा घर आया ,

गर्मी बीती, सावन बीता

है बसन्त फिर से आया ॥

एकाकी जीवन डँसता है

बूढ़ी, थकी, रुग्न काया,

जाना भानस घर था, आयी

देहरी पर, मन भरमाया ।

लिखनी व्यथा स्वयं की थी पर

दर्द गाँव का याद आया ।। बूढी---

मन करती है कड़ा बहुत कि

याद कभी ना करूँ उसे,

जो इस बूढी माँ को भूला

परे हटाकर धरूँ उसे ।

देख डाकिया से कह बैठी

चिट्ठी है? कोई डाक आया ।। बूढ़ी--

अबके गुड़ मीठे, चक्खा था

छींके पर है रख छोड़ा,

उसे खिलाउंगी गुड़-पानी

जब घर आयेगा छोरा।

देख आम में मंजर पुलकित

और उमंगित थी काया ।। बूढी---

सपने पलकों में कितने थे

व्याह, बहू, पोता - पोती ,

कर-कर के नित याद सपन को

बैठ देहरी पर रोती ।

अब तक बैठी है शबरी-सी

राम न उसके घर आया ।। बूढ़ी--

पर आशा की डोर प्राण के -

तन्तु थाम कर रखती है ,

यह माया की है चिड़िया जो

जग-सुख-दुख को चखती है।

जरा-मरण सब भूल आत्मा

तय निवास करती काया ।। बूढ़ी --

अकाल के दिन

रोटी-सा झाँक रहा

चन्दा आकाश से ,

धरती बेचैन इधर

रोज भूख-प्यास से ।।

तपता है सूरज भी

भट्ठी-सा जाने क्यों

नाच रही लू सिर पर

बच्चे-सा, माने क्यों ।

हवा धमन-भट्टी-सी

गर्मी से नाच रही ,

पोखर-तालाब, नदी

सबका ग्रह बाँच रही।

गिलहरी है पेड़ों पर

बेदम-सी लेट गई,

शायद गिरे बूंद

प्राण अटके इस आस से । रोटी-सा--

कैसे किसान कहे भूखा,

अन्नदाता हूँ,

जोड़ - जुगत बनिए -सा,

खाने को लाता हूँ ।

ये मजूर चूहे-सा

दण्ड पेले रोज़-दोज़,

नाच रही भूख सबके

माथे पर खोज-खोज ।

छप्पन व्यंजन-सी माँ

घुघनी परोस रही,

ममता से लगा हृदय

बच्चों को पोस रही ।

यंत्रणा ये कैसी है

हिटलर के शिविर जैसी ,

मौत छूके चली जाती

रोज-रोज पास से ।। रोटी-सा--

जीवन बहुरुपिए - सा

छलता है गाँव-शहर,

धूप-छाँही सुख-दुख में

दुख की ही तीव्र लहर

मकड़े-सा बुनते हैं

सपने का जाल सभी,

और उलझ-उलझ उसमें

मर जाते लोग कभी ।

रोटी चाही तो मिला

भूख का कटोरा,

चाहतों में कितनों ने

बद्दुआ बटोरा ।

साँपिन-सी राह विकट

जीवन की विषैली है ,

डँसती है अपने ही

अन्दाज़ खास से ।। रोटी-सा--

रोटी है सोटी है

रोटी है, सोटी है, सबको लंगोटी है

ना जाने सबकी क्यों नीयत ही खोटी है।

ढ़ेर बड़े सपने हैं, लेकिन कम अपने हैं

अपनों में कितने संबंध बने सपने हैं।

अड़ते हैं, भिड़ते हैं, तिल-तिल कर मरते हैं

सामाजिक प्राणी समाज बीच सड़ते हैं।

डोल रहा अपना विश्वास बीच जीवन के

अक्ल गई चरने कि अक्ल हुई मोटी है ।। रोटी है --

कितने ख़ूंखार हुए धर्मों की आड़ लिए

भेड़िए-सा याकि सिंहों-सा दहाड़ लिए।

हद अपने-अपने हैं, बेहद बने जाते

ख़ूँ से इन्सानों के आटा गुने जाते।

अहंकार टंकार सब के सब बोल रहे

भीतर सियार दृष्टि, मति-बुद्धि छोटी है॥ रोटी है--

मेढ़क की टर-टर में संविधान दुहराते

एक रस्म की तरह झंडा सब फहराते ।

राष्ट्रभक्ति ऊपर से भीतर छल-छन्द भरे

राष्ट्रशक्ति हो कैसे मजबूत, द्वन्द परे ।

अकल्पनीय टूटन में एका-स्वर सधे कैसे

संबन्ध, संकल्प बीच सत्य रोटी है ।। रोटी है--

इंसान, इंसान से है परेशाँ फिर

हर धर्म, हर धर्म से लड़ के बेजाँ फिर ।

किश्तों में मरता है इंसान फोकट में

दो पल में मर जाती इंसानियत चट में ।

जंगल का क़ानून अब हम पर हाबी है

मानवता परे सोच समय की कसौटी है ।। रोटी है--

बड़की भौजी

छोटी-सी थी बड़की भौजी, नन्हें डग से घर आयी थी

फिर छतनार वृक्ष बन सबको स्नेह की छाँव से नहलायी थी।

फूल से कोमल, तूर से हलकी प्यारी-प्यारी बातों से

रोज परोसा करती थी कुछ मुस्कानी सौगातों से ,

नहीं खेलना जाना उसने दूजे के जज़्बातों से

मृदु ममता की मूरत जैसी मुस्काती-सी प्रातों-से।

मृदु सनेह की पुड़िया-कुंकुम घर-भर में वह बिखरायी थी ।। छोटी-
--

वह आंगन का हरसिंगार थी भोर से भोर महक जाती

वह कामिनी-कुसुम मह-मह थी रात औ' वात को महकाती

वह दिन का शतपर्ण कमल थी, सब का मुख लख मुस्काती

वह चम्पा की खिली डाल थी लहराती और बलखाती

उसने घर-आंगन महकाए, सबको प्यारी, मन-भायी थी।। छोटी---

ऊर्जा का उसमें स्फालन था फुदक-फुदक हँस काम करे

कभी न आलस, कभी न परतर, कभी न वह सम्मान-मरे

चाँद-सी निश्छलता की आभा उनके मुख पर आन धरे

कभी टीसती कोई बात तो क्षण में करतीं ध्यान परे

बहू, जेठानी, भौजी, माँ संग संबंधों को लायी थी ।। छोटी---

पंछी-सी उड़ गई तो जाना कैसा था अनमोल रतन

सब संबन्ध बचाने ख़ातिर करती थी तोल-तोल यतन

इतनी प्यारी-सी देवी को हमने कब दिए बोल- वचन

सबने अपनी राह पकड़ली आस भरे गए खोल नयन

लड़ती रही सतत काया से, कहाँ अमरता वर पायी थी।। छोटी---

न घबराना

फूल भी जब शूल बन जाए न घबराना

अग्निवर्षा में कभी आसूँ न बरसाना

विषधरों के देश में किंचित न डरपाना

ज़िन्दगी के अंध गह्वर से न भय खाना ।।

शब्द तेरा सारथी है भय न कर किंचित

कारवाँ पर दिव्यमंत्रों से करो सिंचित ,

हर धरा है उर्वरा कर कर्म अभिसिंचित

अमरता के साधकों से गगन है परिचित ।

मत भुलाना कर्मपथ, सीधे से बढ़ जाना ।। फूल भी ---

मौन भी तो मंत्र है, चीत्कार कायरता

शान्ति से सब पा सकेंगे, विकल क्यों नरता ,

शब्दवेधी मत चलाओ वाण, है जड़ता

विंध श्रवण-से कर्मशाली व्यक्ति है मरता ।

इस विजन में हो सके मधु वायु सरसाना || फूल भी ---

रौशनी की चाह रक्खो, स्याह से हट दूर

पर न तुम कुछ चाहतों के हाथ हो मजबूर ,

जो तिमिर को चीर बाहर निकलता वो शूर

मंगलाशा के दिए की बनो बाती, नूर ।

तमस से हट, ज्योतिपथ को सतत चमकाना।। फूल भी---

जय-पराजय व्यर्थ की बातें, रचो कुछ दिव्य

वह गगन-संगीत गा दो हो मनुज को श्रव्य

मरु-धरा में स्वर्ग-सा वैभव भरो सब नव्य

अब न मांगो दान अंगूठा, न हो एकलव्य ।

सर्वजय हो, खर्व भय, समभाव बिखराना ।। फूल भी ---

लिख सपन गाथा

समय के निर्मम शिला पर

लिख सपन गाथा ।

मंदिरों के चौखटों पर

मत रगड़ माथा ।।

कब खुलेंगे द्वार प्रभु के

सुमन हो अर्पित ,

किंजल्क-सी फरियाद महके

न्याय हो कल्पित ।

ओस-आशा टिके दूर्वा शीष का

यह स्पर्श क्या था ।। समय के निर्मम शिला ---

ग्रीष्म के माथे लिखी है

सावनी संभावनाएँ ,

शरद की इस ज्योत्स्ना में

विरह की शत वर्जनाएँ ।

राख में स्मृति के पिरोती उष्ण

उन्मन की व्यथा ।। समय के निर्मम शिला---

है बसन्ती हवा लिखती प्यार की

महकी ग़ज़ल ,

कोयलों की तान सुन

उन्मन नयन होते सजल ।

भँवर ने गुंजार से कह दी

बसन्ती सब कथा ।। समय के निर्मम शिला---

द्वार खोलो हृदय के

कुछ प्राणवायु आयेगी ,

फूल की ले महक मन की

खिड़कियाँ महकायेगी ।

हरसिंगारी खिलखिलाहट हो

अधर बिच फिर यथा ।। समय के निर्मम शिला---

शब्द में संभावनाओं के

लिखे हैं अर्थ ,

मत करो सीमित कि हो

ताजे यतन सब व्यर्थ ।

चिह्न ही मिट जाय पद के

ढुले आसूँ सर्वथा ।। समय के निर्मम शिला---

बंजारा पन याद रहेगा

पेड़ से टूटे पत्ते जैसे आवारापन याद रहेगा

नज़र चुराते दुनियाभर से बंजारापन याद रहेगा।

मेरी धड़कन के पैरों में बंधी-बँधी थी शिला कोई

मन के आँगन लखन लला को सुबक रही उर्मिला कोई ,

प्रेम की नैया डगमग डोले मन-मंदिर में हिला कोई

यादों की बस तूफ़ाने हैं, तूफानी सिलसिला कोई।

मन टूटे तो बहते आसूँ का खारापन याद रहेगा ॥ पेड़ से ---

बहते हैं हम हवा के रुख में या रुख के विपरीत चलें

रस्में निभा रहे दुनिया के अथवा तोड़ के रीत चलें,

दिल को तोड़ो या मत तोड़ो अथवा लेकर प्रीत चलें

बहलाने के कई हैं जुमले, वक़्त का क्या जो बीत चले ।

समय-रेत का मुट्ठी से बह-बह जानापन याद रहेगा।। पेड़ से---

देखा भर छूकर सपने को, टूट गए सारे सपने

जिन डालों पर इठलाते थे गए सहारे वे अपने ,

जीवन टूटे पत्ते सा बिन हवा लगे थर-थर कँपने

क्यों उड़ना छोड़े वन पाखी, पाँखों को नभ है नपने।

राख में दुबकी चिन्गारी का अंगारापन याद रहेगा।। पेड़ से ---

कल्पलता-सी जब आओगी बंदनवार सजायेंगे

दिल के अतल उतर आओ रंगोली द्वार रचायेंगे,

पलकों में जब जगह मिलेगी दिल को हार दिखायेंगे

तुम एक तृषित धरा बन जाओ, हम बादल बन छायेंगे ।

वरना तड़प-तड़प उठने का बेचारापन याद रहेगा।। पेड़ से---

फसल सुनहरी

सोन चिरैया फसल सुनहरी खेत-खेत जब जाँचती

खजन चिरैया कृषक हृदय की मेड़-मेड़ तब नाचती ।।

पगलाई-सी हवा दुधमुहे रबी फसल को छेड़ गई

फिर आमों, जामुन, महुए पर रोली-कुमकुम फेर गई,

मौलसिरी पर बैठ बाबरी कोयल मधुस्वर टेर गई

पछवाई पकआई शीशों के बीच सरक-कई बेर गई

साँझ का काजल प्रकृति बुआ ले दिक्-शिशुओं को आँजती।। सोन-

--

लछिमिनिया घर-आंगन को अब छोड़ हुई वनवासिनी

खेल रही है फाग फसल के संग स्वर्ण-मुख-हासिनी,

खुश कृषकों के रोम-रोम में पुलकावली बौआसिनी

पल-पल लेती कुशल सुगंधि उत्साहिनी खवासिनी।

वनदेवी का वैभव जागा, निधियाँ खेत विराजतीं || सोन..

मंजरी-युवति बड़ी रस भींगी इत्र-फुलेल लगा महकी

लंपट मधुप पिया मधुरस फिर चाल बड़ी बहकी-बहकी

केसरिया पट पहन के किंसुकवाला है लहकी-लहकी

सरसों की मुस्कानें क़ातिल, अलसी चलती मटकी-मटकी

गिलहरियों की गश्त से पुलकित वनमालिका है राजती॥ सोना---

सुघड़ बसन्ती रंगों से स्वागत फसलों का गाँव में

देख खेत को नयन जुड़ाते कृषक-मुनि हर ठाँव में,

बालें झन-झन बोल रही ज्यों पायल छम-छम पाँव में

विचलित-सा था जीवन सबका अब आए ठहराव में

मन की बगिया महक उठी है बाग-बगीचे साजती ॥ सोन---

गीत गा जीवन के भी

आवारा बंजारा गाओ गीत ज़रा जीवन के भी

कुछ मेरे मन की सुन लेना, कह कुछ अपने मन के भी।

सतरंगे पंखों वाली पंछी का गान सुना जाओ

उमड़-घुमड़ते बादल काले बीच तड़ित चमका जाओ,

थिरक रही बूंदों की रिमझिम कृषकों-सा मुस्का जाओ

बाग-बगीचे, खेत-मेड़ सबको करुणा से नहलाओ

रोप रही सुन्दरियों की कजरी में कह दुख मन के भी ॥ आवारा ---

शरद हास, उल्लास तुम्हारे शब्दों में अंगड़ाई ले

कुसुम-गंध जीवन स्तर को महकाए ये पूर्वाई ले ,

पूनों की चांदनी सरीखी तालों में परछाई ले

आते पाखी दूर देश से हंसों की अगुवाई ले ।

पंछी के कलरव में घोलो मधुरगीत वन्दन के भी। आवारा ---

गाओ तो मधुरितु के गाने अनुरागी मन से प्यारे

कुसुम- कुसुम पर भ्रमर-भ्रमर ने गुनगुन स्वर में दिल हारे ,

कोयल की मधुतान सुनाओ, खंजन नाच भले, न्यारे

विरहिणियों की कसक कहो कुछ, यक्षप्रिया के अश्रु खारे ।

कहो कथा स्वर्णिम क्यारी की, कृषकों के खुश क्षण के भी।।
आवारा ---

परदेशी का हाल सुनाओ, प्रोषितपतिका की पीड़ा

सम्मुख देख बसन्त पाहुने पार्वती-कलि की ब्रीड़ा,

सरसों के पीले फूलों संग अलसी नीली की क्रीड़ा

बाट जोहती सुलग रही नायिका किसी की मन धीरा।

पथराई बूढ़ी आँखों में तिरती आशा और जन के भी ।। आवारा---

खाने को दाने लाते जो चुन-चुन कर के खेतों से

बीना करते कौड़ी-कौड़ी जो नदियों की रेतों से ,

बिना रीढ़ के जीवन जिनका झुकना पड़ता बेतों-से

जो कोल्हू के बैल-से खटते रहते हैं संकेतों से।

बिटिया की बारात आगे नत जनकों के क्रन्दन के भी।। आवारा---